

पश्चिम मध्य रेलवे

मुख्यालय, जबलपुर

राजभाषा सरिता

हिंदी की उड़ान
धरती से
आकाश तक

वर्ष-2023 अंक-47 अप्रैल-सितंबर

अश्विनी वैष्णव
Ashwini Vaishnaw

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सत्यमेव जयते

रेल, संचार एवं इलेक्ट्रॉनिकी और
सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री
भारत सरकार
**Minister of Railways
Communications & Electronics and
Information Technology
Government of India**



प्रिय साथियों,

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत एक बहुभाषी देश है और विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस में विशेष स्थान प्राप्त किया है।

भारतीय रेल, राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के लिए सदैव सजग रही है। राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्य के लिए रेल मंत्रालय को वर्ष 2021-22 का तृतीय राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ है। सभी रेलकर्मी इसके लिए बधाई के पात्र हैं।

आइए हिंदी दिवस पर यह संकल्प लें कि सामूहिक प्रयासों से देश में हिंदी के प्रचार-प्रसार और प्रयोग को नया आयाम देंगे।

जय हिंद!

अश्विनी
14/9/21

अश्विनी वैष्णव

सुधीर कुमार गुप्ता
Sudhir Kumar Gupta
महाप्रबंधक
General Manager

पश्चिम मध्य रेलवे
West Central Railway



संदेश

हिंदी दिवस - 14 सितंबर 2023

प्रिय साथियो ,

हिंदी दिवस के पावन अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

किसी भी देश की भाषा उस देश की संस्कृति की संवाहक होती है और हिंदी ने इस भूमिका को बखूबी निभाया है। यह संपूर्ण भारत को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा रही है। हिंदी की इसी महत्ता को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 को देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। तभी से इस ऐतिहासिक दिन की याद में हम प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाते हैं।

संघ की राजभाषा होने के नाते हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम अपने दैनिक सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें तथा साथी अधिकारियों / कर्मचारियों को इस हेतु प्रेरित भी करें।

पश्चिम मध्य रेलवे पर अधिकांश सरकारी कामकाज ई-ऑफिस के माध्यम से निष्पादित किया जा रहा है, जहां यूनिकोड की सहायता से अब मूल रूप से हिंदी में नोटिंग / ड्राफ्टिंग तैयार करना काफी आसान हो गया है। साथ ही, पश्चिम मध्य रेलवे के संपूर्ण कार्य क्षेत्र के अधिकांश लोग हिंदी बोलते और समझते भी हैं। अत: बहुसंख्यक जनता की सेवा और ग्राहक संतुष्टि की दृष्टि से भी हिंदी का प्रयोग हमारे लिए आवश्यक है।

भारत विश्व पटल पर एक आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। आज हम दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। हम जल, थल और नभ में नित नए कीर्तिमान रच रहे हैं। परिणामस्वरूप हिंदी भाषा भी वैश्विक स्तर पर सशक्त और सबल हुई है और इसने संपर्क भाषा के रूप में एक विशिष्ट पहचान बनाई है। यह हम सभी भारतवासियों के लिए गौरव का विषय है।

जैसा कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का मूल आधार प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना है। तदनुसार सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग-प्रसार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रेल के विभिन्न कार्यालयों में कई प्रोत्साहन योजनाएं लागू हैं। यह बताते हुए मुझे काफी खुशी हो रही है कि इस वर्ष पश्चिम मध्य रेलवे को रेलवे बोर्ड की 'आचार्य महावीर प्रसाद चल वैजयंती' सहित रेलवे बोर्ड की विभिन्न पुरस्कार योजनाओं में 05 अधिकारी एवं 03 कर्मचारी पुरस्कृत किए गए हैं। पिछले वर्ष सर्वोच्च अधिकार प्राप्त संसदीय राजभाषा समिति ने पश्चिम मध्य रेलवे के कोटा एवं भोपाल रेल कार्यालयों के साथ निरीक्षण बैठक के दौरान राजभाषा प्रगति पर संतोष व्यक्त किया।

इन उपलब्धियों के लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ। मुझे आशा ही नहीं परंतु पूरा विश्वास है कि आप सभी इसी उत्साह से राजभाषा प्रयोग- प्रसार में अपना योगदान देते रहेंगे।

आइए, हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हम अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करेंगे।

जय हिंद !

सुधीर कुमार गुप्ता
महाप्रबंधक

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

संपादक की कलम से .....

संपादकीय



हिंदी दिवस 2023 की हार्दिक शुभकामनाएं !

भाषाई विविधता वाले हमारे देश को 'हिंदी भाषा' ने एकता के सूत्र में पिरोकर रखा है। देश की विभिन्न भाषा एवं बोलियों के साथ वैश्विक भाषाओं से भी शब्द/पद/वाक्य विन्यास को अपने में समाहित कर हिंदी भाषा ने अपनी लोकप्रियता एवं स्वीकार्यता को विस्तार दिया है।

जन-जन को जो मिलाती है, वह भाषा हिंदी कहलाती है।

आज भारत विश्व पटल पर राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक महाशक्ति के रूप में ऊंचाईयाँ छू रहा है। भारत जल, थल एवं नभ में नए कीर्तिमान रच रहा है। जी-20 का सफल एवं सशक्त आयोजन तथा चंद्रयान-3 व आदित्य एल-1 का निर्बाध प्रक्षेपण इसके सजीव प्रमाण हैं। परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा भी सशक्त और सबल हुई है। संपर्क भाषा के रूप में इसने एक विशिष्ट पहचान बनाई है।

विश्व हिंदी सम्मेलनों में दुनिया के विभिन्न देशों की भागीदारी एवं अभी तक 12 विश्व हिंदी सम्मेलनों के सफल आयोजनों ने भारत के 'वसुधैव कुटुंबकम्' भाव के साथ हिंदी भाषा की समावेशी प्रकृति को सच कर दिखाया है। हिंदी अपनी सरलता, सहजता और साहित्यिक विरासत के साथ आज सूचना प्रौद्योगिकी और तकनीक की भाषा के रूप में युवाओं में अधिक लोकप्रिय हो रही है।

देश की गौरवमयी विरासत भारतीय रेल के हृदयस्थल पश्चिम मध्य रेलवे के संपूर्ण कार्यक्षेत्र में हिंदी भाषी लोग रहते हैं। इस रेलवे के रेलकार्मिकों ने अपने सरकारी कामकाज में हिंदी की रसधारा प्रवाहित कर रेल उपयोगकर्ताओं के लिए बेहतर सेवाप्रदाता की भूमिका निभाई है। फलस्वरूप पश्चिम मध्य रेलवे को कार्य के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के सराहनीय प्रयोग-प्रसार हेतु पश्चिम मध्य रेलवे को प्रतिवर्ष गौरांवित होने के अवसर मिले हैं। इस वर्ष पश्चिम मध्य रेलवे को '**आचार्य महावीर प्रसाद चल वैजयंती**' शील्ड प्राप्त हुई तथा विभिन्न पुरस्कार योजनाओं में पांच अधिकारी एवं तीन कर्मचारी पुरस्कृत हुए हैं।

पश्चिम मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री सुधीर कुमार गुप्ता के कुशल मार्गदर्शन, मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर महाप्रबंधक श्री रवि शंकर सक्सेना की प्रेरणा तथा सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के समर्पण से सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी की निर्मल धारा प्रवाहमान है। गृह पत्रिका 'राजभाषा सरिता' से जुड़े रेल रचनाकारों ने अपने लेखन शिल्प से इसे निरंतर श्रृंगारित किया है। 'राजभाषा सरिता' का नवीनतम 47वाँ अंक आपके आलोक हेतु समर्पित है।

आपके सुझावों की प्रतीक्षा में ...

(राज रंजन श्रीवास्तव)
राजभाषा अधिकारी



राजभाषा सरिता

अंक – 47 वर्ष–2023 अप्रैल–सितंबर

संरक्षक
श्री सुधीर कुमार गुप्ता
महाप्रबंधक

मार्गदर्शक
श्री रवि शंकर सक्सेना
अपर महाप्रबंधक
एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

परामर्श
श्री महेश कुमार
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
उप वित्त सला. एवं मु. ले.अधि. (वि/ब)

संपादक
राज रंजन श्रीवास्तव
राजभाषा अधिकारी

उप संपादक
राकेश कुमार मालवीय
वरिष्ठ अनुवादक

संपादकीय सहयोग
प्रभाकर भूषण
बिपुल कुमार मंडल

छायांकन
श्री राजेन्द्र पैगवार

पत्राचार का पता
संपादक, राजभाषा सरिता
महाप्रबंधक कार्या. प.म.रे.
इंदिरा मार्केट, जबलपुर
e-mail : rbajbphq@gmail.com

• सीमित संख्या में नि:शुल्क वितरण के लिए
• पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं ।

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
01.	माँ भारती के भाल पर...	आर.के. मालवी	2–4
02.	हिंदी के विकास में...	संजीव वर्मा	5–6
03.	जी–20 शिखर सम्मेलनों...	घनश्याम मैथिल	7–8
04.	प.म.रे. स्काउटिंग एवं गाइडिंग	सुवीर श्रीवास्तव	9–11
05.	वंदे भारत–भारतीय रेल के एक नये...	बसंत गोरे	12
06.	खुदाई चालू आहे (व्यंग्य)	बसंत कुमार शर्मा	13–14
07.	हिंदी दिवस मनाएं (कविता)	बसंत कुमार शर्मा	14
08.	भारतीय संस्कृति की प्राण आत्मा...	संजय शर्मा	15–16
09.	ग़ज़ल	आर.सी. माहौर	16
10.	कल से डायटिंग पर हूँ (व्यंग्य)	शरद उपाध्याय	17–18
11.	तनाव प्रबंधन	टी.आर. बामने	19–20
12.	अस्पृश्यता और डॉ. अंबेडकर	किशोर कुमार गजभिये	21–23
13.	अब लाठी छड़ी सहारे है (कविता)	ललन प्रसाद विश्वकर्मा	23
14.	भावनात्मक बुद्धिमत्ता	अदिति बोचरे	24–25
15.	बातों का उस्तरा (व्यंग्य)	सतीश चंद्र श्रीवास्तव	26–27
16.	यदि वह होती (कविता)	डॉ. अलकेश खत्री	27
17.	घर से निकल गए (कविता)	मजहर खान	27
18.	हथेली पर नून	प्रभात कुमार झा	28
19.	अखियों के नूर, घर से दूर	नरोत्तम नामदेव	29
20.	मेरी रेल यात्रा (यात्रा संस्मरण)	शिव कुमार शर्मा	30
21.	हिंदी प्यारी (कविता)	अखिलेश व्यौहार	31
22.	हमारी हिंदी (कविता)	राजेश कुमार लखेरा	32
23.	शिक्षा उम्र की मोहताज नहीं होती (कविता)	कौशिक सेन गुप्ता	33
24.	पानी (कविता)	वर्षा मालवीय	33
25.	राजभाषा : उपलब्धियां		34
26.	छायाचित्र–वीथिका		35–40

मुख पृष्ठ : 18वाँ जी–20 शिखर सम्मेलन, भारत मण्डपम् व चन्द्रयान–3

भारत माँ के भाल पर, हिंदी तिलक समान

हिंदी के विकासक्रम में हिंदी का यह सलिल-स्वरुप तमाम परिवर्तनों-प्रतिरोधों से संघर्षों के प्राज्ञ-प्रयासों का परिष्कृत-प्रतिफल है। वैदिक संस्कृत से लेकर लौकिक संस्कृत एवं आगे पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट एवं खड़ी बोली से होती हुई, हिंदी के इस स्वरुप तक की यह यात्रा, इतनी सहज नहीं थी। आज हम भारत की स्वर्णिम संस्कृति के कोकिल-स्वर हिंदी के विकासक्रम में, उस कालखंड की यात्रा कर रहे हैं, जब भारत पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति हेतु संघर्षशील था। इस लेख के माध्यम से हम यह अनुभूति करेंगे कि- कैसे स्वाधीनता आंदोलनों में हिंदी 'क्रांति का स्वर' बनकर उभरी एवं कैसे सम्पूर्ण भारत में स्वाधीनता आंदोलनों के माध्यम से 'हिंदी का विस्तार' हुआ। भारतेंदु जी ने निज भाषा की महत्ता को बताते हुए कहा था -

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय के सूल।'

और मैथिलीशरण गुप्त जी का स्वप्न था कि-

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती- भगवान् !
भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।

आईये हम पराधीन भारत के उस कालखंड की यात्रा में, स्वाधीनता संघर्षों के विभिन्न पड़ाव से होकर गुजरते हैं और देखेंगे हिंदी का तमाम अवरोधों की ज्वालाओं में तपकर कुंदन होने का पराक्रम ।

स्वाधीनता संघर्ष और परिस्थितियां:- वस्तुत: स्वाधीनता संघर्ष का श्री गणेश सन् 1857 से होता है और इसकी इति श्री 1947 में। स्वाधीनता संघर्ष के दौरान विदेशी सरकार ने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक और आर्थिक परिस्थितियों के विषम आरोह-अवरोह लाकर भारतीय जन-जीवन को प्रभावित किया। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप आक्रोश उपजा, जन मानस में नवजागरण आया जिसके परिणामस्वरूप देश में एक सूत्रता बढ़ी । इस एक सूत्रता को पुष्ट करने के लिए एक सक्षम अभिव्यक्ति साधन के रूप में हिंदी को अपना राष्ट्रीय कर्त्तव्य निर्वाह करने का अवसर ही नहीं मिला वरन् उसने अपना राष्ट्रीय रूप प्रतिष्ठापित किया। हिंदी का अखिल भारतीय रूप राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक, कारणों से निखरा। तब कहना न होगा कि-

प्रेम सुधा बरसा रही, हिंदी सबके द्वार।
देश-प्रेम-बलिदान का, जन-जन में संचार।

भारत माँ के भाल पर, हिंदी तिलक समान।
देश का अभिमान है, जन गण मन का गान।

हालाँकि उस समय देश में भाषायी त्रिवेणी प्रवहमान थी। संस्कृत धार्मिक कार्यों की भाषा, अरबी-फारसी एवं अंग्रेजी राजकाज की। भारतीयों की अभिरुचि विदेशी भाषाओं के प्रति जो कुछ थी वो अब घटने लगी और देशी भाषाओं की ओर आकर्षित हुई। जनमानस ने हिंदी की व्यापकता के प्रति सरकार को सजग किया लेकिन तब लार्ड मैकाले जैसे कुसंस्कारी एजेंट के प्रयासों से अंग्रेजी फिर भी भारत की पीठ पर लदी ही रही। तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों में स्वाधीनता संग्राम की ज्योति जगी, संघर्ष तीव्रतर हुआ, स्वदेशी की भावना प्रबल हुई जिससे राष्ट्रीयता को बल मिला। विदेशी वस्तु हो या भाषा उसके बहिष्कार में राष्ट्रीयता का आभास मिला। यह राष्ट्रीयता,कोई नकारात्मक राष्ट्रीयता न थी वरन् एक ऐसी अजस्र धारा थी जिसमें ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परम्पराओं की अक्षुण्ण धाराएँ मिलती थीं जिन्हें अंतत: स्वाधीनता रूपी सागर में मिल ही जाना था।

राष्ट्रीय आंदोलन का स्वर :- उपर्युक्त परिस्थितियों में राष्ट्रभाषा की संकल्पना एवं राष्ट्रभाषा प्रेम को, देश-प्रेम की संज्ञा दी जाने लगी थी। गाँधी जी ने कहा- हिंदी केवल भाषा का ही नहीं वरन स्वराज का प्रश्न है। बंगाल के जस्टिस केशवचन्द्र सेन ने कहा, 'हिंदी अखिल भारत की जातीय भाषा या राष्ट्र भाषा बनने योग्य है।' हिंदी को भारतवर्ष की एकमात्र भाषा स्वीकार कर लिया जाय, तो सहज ही में यह एकता सम्पन्न हो सकती है। इस विकास क्रम में भारतेन्दु युग से लगा द्विवेदी युग नवजागरण लेकर आया।

हिंदी भाषा बन गयी, राष्ट्र की पतवार।
राज-भाषा ही करे, भारत-नौका पार।।
महाराणा का भाल है, लक्ष्मी का संग्राम।
भगत का बलिदान भी, हिंदी के ही नाम।

वर्ष 1880 तक पहुँचते-पहुँचते हिंदी-आंदोलन एक राष्ट्रीय-आंदोलन बन गया। 1882-86 में क्रमश: राजनारायण बोस और भूदेव मुखर्जी, नवीनचन्द्र राय ने राष्ट्रीय एकता के लिए हिंदी की उपयोगिता पर बल दिया। तिलक ने कहा था, 'राष्ट्र संगठन के लिए आज ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे सर्वत्र समझा जा सके। हिंदी

राष्ट्रभाषा बन सकती है। सुभाषचन्द्र बोस,अनन्त शयनम् आयंगर, मदनमोहन मालवीय, डॉ. राममनोहर लोहिया हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में मानते थे। भारत के संविधान के निर्माताओं में अग्रणी कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने कहा था, 'भारत के भविष्य का निर्माण राष्ट्रभाषा भारती (हिंदी) के उद्भव और विकास के साथ सम्बद्ध है अतएव हिंदी ही अंग्रेजी का स्थान ले सकती है। क्योंकि हिंदी के ये गुण है कि–

उच्चारण बिन दोष के, व्याकरण में विज्ञान।
हिंदी के भंडार में, शब्द-अर्थ का ज्ञान ।

हिंदी का विज्ञान सम्मत व्याकरण और अथाह शब्द भंडार के कारण यह विश्व की श्रेष्टतम भाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। वहीं अंग्रेजी की शब्द गढ़ने की शक्ति नष्ट हो चुकी है, जबकि हिंदी अपने चिर यौवन पर है जो संसार की सबसे सौन्दर्यशाली भाषा है। डॉ. राममनोहर लोहिया, विनोबा भावे ने तो मातृभाषा और राजभाषा को भारत माता की दो आँखों की संज्ञा दी थी।

राष्ट्रभाषा से राष्ट्रीयता की ओर साहित्यिक क्रांति :– उस समय राष्ट्रीयता के परिप्रेक्ष्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की 'भारत-जननी' और 'भारत-दुर्दशा' सामने आई। पंडित बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप', तो श्रीधर पाठक ने 'भारत चेत नीर निवारी' के द्वारा राष्ट्रीयता का शंखनाद किया। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती', वहीं जयशंकर प्रसाद के नाटकों के गीतों से तो गोकुल चन्द शर्मा की 'गांधी गौरव', 'तपस्वी तिलक' से राष्ट्रीय भावनाओं की ज्वालायें अभिव्यक्त हुई। राष्ट्रीय क्रांति साहित्यिक क्रांति के बिना एवं साहित्यिक क्रांति साहित्यकारों के बिना संभव न थी । हिंदी और हिंदी के सैनानियों का महत्व इन पंक्तियों में देखा जा सकता है –

जागे मन संवेदना, चेतन प्रज्ञावान ।
हिंदी में सदभावना, सदगुणों की खान।
नानक-माखन-पंतजी,सूरदास-रसखान।
तुलसी, मीरा ने किया, हिंदी का सम्मान।

साहित्य में द्विवेदी युग और छायावादी युग के संधिकाल में राष्ट्रीयता का उद्घोष गुप्तबन्धु, बालकृष्ण शर्मा नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी आदि कवियों ने किया। कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ जिससे उथल-पुथल मच जाए, कोकिल बोलो ले, मुझे तोड़ लेना वनमाली और बाद में खूब लड़ी मर्दानी वह तो राष्ट्रभाषा के विकास में आगे-पीछे के अनन्य सोपान हैं।

इस प्रकार राजनीतिक राष्ट्रीयता के विकास के साथ राष्ट्रभाषा की कल्पना राष्ट्रीय एकता के प्रतीकों के रूप में पल्लवित होने लगी जो निसंदेह स्वतंत्रता रूपी वृक्ष का शैशवकाल ही तो था। राष्ट्रभाषा अब राष्ट्रीय सम्मान हो चुकी थी। यही नहीं, भावनात्मक एकता के लिए भाषा की एकता का विचार पुष्ट हुआ और तब हिंदी अपनी सार्वभौमिकता,व्यापकता, सरलता और सर्वप्रियता के कारण राष्ट्रभाषा के रूप में ग्रहण की गई। 1918 में महात्मा गांधी ने कहा था – मेरा यह मत है कि हिंदी ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है और होनी चाहिए क्योंकि–

हिंदी से ही उन्नति है, हिंदी करे विकास।
हिंदी राष्ट्र की नींव है, हिंदी है विश्वास।।

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, गोस्वामी गणेश दत्त जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में चमकाया। डॉ. राजेन्द्रप्रसाद, सेठ गोविन्द दास राष्ट्रभाषा के अन्यतम प्रहरी थे। उन्होंने राष्ट्रभाषा आंदोलन को उर्मित किया। अहिंदी भाषी नेताओं की प्रमुख कड़ी हैं– काका साहब कालेलकर, उन्होंने हिंदी प्रचारक बनकर दक्षिण भारत में हिंदी का अलख जगाया। राष्ट्रीयता के विकास के साथ ही साथ राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज, राष्ट्रीय पक्षी आदि को मान्यता मिली। यदि सिंहावलोकन करें तो देखते हैं कि सरकार की उदासीनता तथा निष्क्रियता के बाद भी **हिंदी पल्लवित और संस्कृति प्रफुल्लित होती रही।** हिंदी का परिनिष्ठित रूप निखरने लगा था। राष्ट्रीय आन्दोलन ने हिंदी का प्रचार-प्रसार किया तो हिंदी ने आंदोलनों को मुखर। हिंदी राष्ट्रभाषा का सही पर्याय बन गई।

हिंदी का दक्षिण में विस्तार :– गांधी जी द्वारा संबोधित बेलगाँव अधिवेशन हो या प्रथम अखिल कर्नाटक हिंदी प्रचार सम्मेलन हो, या हिंदी प्रचार सभा, मद्रास का शुभारम्भ अथवा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के नामकरण का विचार, ये वे सूत्र थे जिन्होंने समस्त दक्षिण में हिंदी का सूत्रपात किया। केरल में प्रचारक के.एम. दामोदरन उण्णि ने केन्द्र-केन्द्र पर हिंदी का अलख जगाया जिससे इसमें स्वतंत्रता आंदोलन की भावना ने काम किया। दक्षिण में हिंदी के प्रचार-प्रसार का इतिहास तमिलनाडु के प्रयासों का ही प्रतिफल है। हिंदी प्रचार सभा की स्थापना, हिंदी वर्गों का उद्घाटन,हिंदी प्रचारकों का दक्षिण आगमन और हिंदी प्रचार प्रेस की स्थापना ऐसे प्रारम्भिक कदम थे जिनके कारण तमिलनाडु में 1922 तक हिंदी का काफी प्रचार हुआ। आंध्रप्रदेश का हिंदी के सन्दर्भ में प्रमुख स्थान है। तीर्थ यात्रियों, व्यापारियों,राजनीतिज्ञों के आवागमन से तो हिंदी पनप ही रही थी मगर

इसकी गति में तेजी लाने का श्रेय आर्यसमाज और गांधी जी को जाता है। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की आंध्रशाखा की स्थापना, जातीय कला- शाला और महाविद्यालयों में हिंदी का प्रवेश, नगरपालिका के स्कूलों में हिंदी का अध्ययन ने हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ाया है। इन प्रयासों से देश की अधिकांश जनता हिंदी को हृदयंगम करने लगी थी जिससे देश की भावात्मक एकता में सारल्य आया। कह सकते है कि अब –

उत्तर- दक्षिण सब जगह, हिंदी का सम्मान।
हिंदी से ही दिल जुड़े, हिंदी ही पहिचान।।

हिंदी का अन्य राज्यों में प्रचार-प्रसार :-

असम हिंदी प्रचार समिति, स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान राष्ट्रभाषा हिंदी के कार्य के लिए आगे आई, जो विकसित होकर असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के रूप में अवतरित हुई। इसके प्रतिष्ठापक हिंदी सेवकों में गोपीनाथ बरदले, डॉ. हरिकृष्ण दास, रमेशचन्द्र, शीलवती देवी, नीलमणि फुकन, भुवनचन्द्र मर्ग आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। उड़ीसा में हिंदी शिक्षण मंदिर स्थापित हुए। इसके बाद 'उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा' ने उल्लेखनीय कार्य किया। स्वाधीनता हेतु संघर्षशील बंगाल हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी अग्रणी रहा। राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने हिंदी को बल प्रदान किया। आचार्यसेन हिंदी को एकरूपता का महामंत्र मानते थे। हिंदी साहित्य की समृद्धि में बंकिम बाबू और रवीन्द्र बाबू का सक्रिय योगदान है। बंग राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, बंगाल राष्ट्रभाषा प्रचार समिति जैसी संस्थाओं के जन्म ने राष्ट्रभाषा हिन्दी को आगे बढ़ाने में मदद की।

यदि बापू के जन्म प्रदेश पर नजर डालें तो देखते हैं कि- मराठी साहित्य परिषद और गुजराती साहित्य परिषद के द्वारा सराहनीय कार्य किये गए। सरदार पटेल ने काठियावाड़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति नामक संस्था की स्थापना की गई। उधर सौराष्ट्र में विभिन्न संस्थाएँ हिंदी के प्रचार को बढ़ाने लगीं। विद्यापीठों में हिंदी की पढ़ाई अनिवार्य की गई। यही नहीं गुजरात के आश्रमों में भी हिंदी एक आवश्यक विषय बना । इस तरह साहित्यक एवं सामाजिक प्रयासों से हिंदी का उपवन सर्वत्र खिलने लगा कह सकते है- **हँसता चेहरा खिलता फूल, हिंदी भाषा राष्ट्र के अनुकूल।** इसके सौन्दर्य को इस दोहे में देखिये –

वाणीं में माधुर्य ज्यों, वीणा की झंकार।
ओज प्रसाद शब्द-गुणी, हिंदी रस की धार।

रियासत काल में ही पंजाब में हिंदी कवियों और हिंदी के विद्वानों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में काफी योगदान किया था। सनातनधर्म सभा ने रात्रि पाठशालाओं, स्कूलों, कालेजों के रूप में राभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया। ऋषि दयानन्द इन सब में अग्रणी थे। लाला लाजपतराय ने स्वयं हिंदी सीखकर राष्ट्र के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किया। नेता अपने भाषण, अपनी वार्ता, अपनी चर्चा हिंदी में करते थे। ऐसे ही महाराष्ट्र में हिंदी विषय, हिंदी माध्यम, हिंदी प्रचारक, हिंदी विद्वान हिंदी रूपी महायज्ञ में आहुति दे रहे थे । राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, महाराष्ट्र, राष्टभाषा सभा, बम्बई, हिंदी विद्यापीठ, हिंदुस्तानी सेवादल, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे; बम्बई प्रान्तीय राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, बम्बई, भारतीय विद्यापीठ, बम्बई जैसी अनेक संस्थाओं और इन संस्थाओं से सम्बन्धित विद्वानों, नेताओं ने राष्ट्रभाषा हिंदी के उन्नयन में उल्लेखनीय कार्य किया। 'विश्व हिंदी सम्मेलन' की कल्पना और राष्ट्रभाषा हिंदी के द्वारा **वसुधैव कुटुम्बकम्** की भावना को प्रश्रय यदि कहीं मिला तो वह महाराष्ट्र की भूमि में मिला। वहीं से राष्ट्रभाषा नहीं वरन् विश्व भाषा के रूप में हिंदी को विकसित करने का अंकुरण हुआ।

इस प्रकार हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में राष्ट्रीयता एवं स्वाधीनता आंदोलनों की प्रणेता बनी तो वहीं स्वाधीनता आंदोलन हिंदी एवं राष्ट्रभाषा के लिए प्रेरक बना। यह पूर्णरूपेण स्पष्ट होता है कि स्वाधीनता संघर्ष की तेजी के साथ-साथ हिंदी का प्रचार-प्रसार भी बढ़ा। देश के प्रत्येक राज्य में, प्रत्येक प्रदेश में वहाँ की जनता ने सक्रिय सहयोग दिया। हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी को बढ़ना ही था, अहिंदी भाषी राज्यों में स्व और राष्ट्र की भावना से प्रेरित होकर हिंदी के प्रचार-प्रसार में कोई व्यवधान उपस्थित नहीं हुआ वरन् सबने हिंदी को राष्ट्रभाषा/सम्पर्क भाषा के रूप में ग्रहण ही नहीं किया अपितु यथासम्भव योगदान से विकास-विस्तार कर उसका मान बढ़ाया। हिन्दी के स्वीकार्यता, सार्वभौमिकता एवं सर्वज्ञता की सम्पुष्टि राष्ट्रनायकों ने, 14 सितम्बर सन् 1949 को हिंदी को संविधान में भारत की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठापित करके की। इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गयी। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिये 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

✍ आर.के. मालवी 'प्रखर'
सीनियर सेक्शन इंजी./टेली/मुख्य/भोपाल
मो.: 9752416821



हिंदी के विकास में क्षेत्रीय भाषाओं/बोलिओं का योगदान

भाषा क्या है? भाषा के माध्यम से मनुष्य बोलकर, लिखकर या संकेत कर परस्पर अपना विचार सरलता, स्पष्टता, निश्चितता तथा पूर्णता के साथ प्रकट करता है। अपनी अनुभूतियों या मनोभाव को व्यक्त करना भाषा है। भाषा के तीन रूप वाचिक (मौखिक), लिखित तथा सांकेतिक हैं ।

भाषा शास्त्री डॉ. बाबूराम सक्सेना के अनुसार, 'भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है और एक ऐसी शक्ति है, जो मनुष्य के विचारों, अनुभवों और संदर्भों को व्यक्त करती है, जिन ध्वनि चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार-विनिमय करता है, उनकी समष्टि को ही भाषा कहा जाता है।'

बोली क्या है? बोली भाषा का आरंभिक रूप है। बोली एक सीमित क्षेत्र में बोली जाती है, भाषा अपेक्षाकृत अधिक बड़े क्षेत्र में बोली जाती है। बोली में व्याकरण संबंधी बंधन लचीले होते हैं, भाषा में रूढ़। बोलियों में कहा-लिखा साहित्य लोक में साहित्य कहा जाता है। बोली वह नींव है जिस पर भाषा का भव्य प्रसाद निर्मित किया जाता है। भारत के विविध अंचलों में लगभग 650 बोलियाँ बोली जाती हैं।

हिंदी की बोलियाँ- हिंदी के मूल में विविध अंचलों में प्रचलित बोलियाँ रही हैं, इसी कारण देश के विविध भागों में आम जनों द्वारा बोली जाती हिंदी में अंतर मिलता है। अपभ्रंश से राजस्थानी हिंदी, शौरसेनी से पश्चिमी हिंदी, अर्द्धमागधी से पूर्वी हिंदी, मागधी से बिहारी हिंदी' तथा खस से पहाड़ी हिंदी का विकास हुआ है राजस्थानी हिंदी की बोलियाँ मारवाड़ी, मेवाती, मेवाड़ी, हाड़ौती, शेखावाटी, झुंझाड़ी आदि, पश्चिमी हिंदी की बोलियाँ बृज, बांगर, बुन्देली, कन्नौजी आदि, पूर्वी हिंदी की बोलियाँ अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी आदि, बिहारी हिंदी की बोलियाँ अंगिका, बा जका, भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि तथा पहाड़ी हिंदी की बोलियाँ गढ़वाली आदि हैं। हिंदी भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से नहीं, अपभ्रंश भाषाओं से और अपभ्रंश की उत्पत्ति प्राकृत से हुई है। प्राकृत भाषाओं के बाद अपभ्रंशों का जन्म हुआ और उनसे वर्तमान संस्कृतोत्पन्न भाषाओं का। हमारी वर्तमान हिंदी, अर्द्धमागधी और शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है।

राष्ट्र-भाषा :- किसी राष्ट्र के अधिकांश क्षेत्र में अधिकांश जनों द्वारा समझी, बोली, पड़ी और/या लिखी जानेवाली भाषा को राष्ट्र-भाषा कहते हैं। हिंदी इसी अर्थ में राष्ट्र-भाषा है। भारत की अन्य कोई भी भाषा हिंदी से अधिक समझी, बोली, पड़ी और/या लिखी नहीं जाती है।

राज-भाषा - किसी राष्ट्र के संविधान द्वारा देश की सरकार के काम-काज हेतु निर्धारित भाषा को राजभाषा कहा जाता है। यह शासन-प्रशासन के दैनंदिन काम-काज की भाषा होती है। भारत सरकार की राजभाषा हिंदी है।

राज्य-भाषा - किसी राज्य के अधिकांश भूभाग में और/या अधिकांश लोगों द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली भाषा उस राज्य की राज्य-भाषा होती है। जैसे राजस्थान में राजस्थानी, मध्य प्रदेश में हिंदी, महाराष्ट्र में मराठी, बंगाल में बांग्ला वहाँ की राज्य भाषा हैं।

भाषा के आधार- भाषा के दो मुख्य आधार हैं। मानसिक आधार वक्ता द्वारा अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त विचार या भाव तथा भौतिक आधार वर्ण, अनुतान, स्वराघात आदि जिनके सहारे भाषा में प्रयुक्त ध्वनियाँ और इनसे निकलने वाले विचारों या भावों को ग्रहण किया जाता है, होते हैं। उदाहरण 'नदी' शब्द के अर्थ से वक्ता और श्रोता दोनों को ज्ञात होगा। भौतिक आधार- भौतिक आधार अभिव्यक्ति का साधन है और मानसिक आधार साध्य। दोनों के मिलने से ही भाषा का निर्माण होता है। इन्हें ही 'बाह्य भाषा' और 'आन्तरिक भाषा' कहा जाता है।

देवनागरी लिपि- 'हिंदी' और 'संस्कृत' देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। 'देवनागरी' लिपि का विकास 'ब्राह्मी लिपि' से हुआ, जिसका सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात नरेश जयभट्ट के एक शिलालेख में मिलता है। 8वीं एवं 9वीं सदी में क्रमशः राष्ट्रकूट नरेशों तथा बड़ौदा के ध्रुवराज ने अपने देशों में इसका प्रयोग किया था। महाराट्र में इसे 'बालबोध' के नाम से संबोधित किया गया। देवनागरी लिपि पर तीन भाषाओं का महत्वपूर्व प्रभाव है।

(1) प्रभावः-पहले देवनागरी लिपि में जिह्वामूलीय ध्वनियों को अंकित करने के चिन्ह नहीं थें, जो बाद में फारसी से प्रभावित

होकर विकसित हुए- क , ख, ग, ज, फ।

(2) बांग्ला प्रभाव:- गोल-गोल लिखने की परम्परा बांग्ला लिपि के प्रभाव के कारण शुरू हुई।

(3) रोमन प्रभाव:-इससे प्रभावित हो विभिन्न विराम चिन्हों, जैसे-अल्प विराम,अर्द्ध विराम, प्रश्नसूचक चिन्ह, विस्मय सूचक चिन्ह, उद्धरण चिन्ह एव पूर्ण विराम में 'खड़ी पाई' की जगह 'बिन्दु' का प्रयोग होने लगा।

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ- वैज्ञानिक ध्वनि क्रम, प्रत्येक वर्ग में अघोष फिर सघोष वर्ण, वर्गों की अंतिम ध्वनियाँ नासिक्य, एक समान छपाई एवं लिखाई, ह्रस्व एवं दीर्घ स्वर विभाजन, निश्चित मात्राएँ, उच्चारण एवं प्रयोग में समानता तथा प्रत्येक के लिए अलग लिपि चिन्ह हैं।

हिंदी पर बोलिओं / लोक भाषाओं का प्रभाव-

1. शब्द- हिंदी का शब्द भंडार समृद्ध है। इस समृद्धि का मूल बोलियाँ ही हैं। हिंदी ने भारत की सभी बोलियों से निस्संकोच शब्द ग्रहण कर अपने बना लिए हैं। कुछ शब्द ज्यों की त्यों लिए गए हैं, कुछ को हिंदी ने अपनी प्रकृति के अनुसार ढ़ाल लिया है। देशज तथा हिंदी में प्रयुक्त कुछ शब्द-देशज अवगुन-अवगुण, बुंदेली अठवाई (आठ पूड़ी), अवधी-परपंच-प्रपंच,पहुना-अतिथि,ब्रज गोधन-गौएँ, भोजपुरी अँकवार-आलिंगन, मालवी माच-मञ्च, कौरवी इनने-उनने-इन्होंने, उन्होंने, मगही-दुल्हिन-दुल्हन, भोजपुरी गोड़-पैर, लबर धोंधों-मंद बुद्धि, मैथली बाभन- ब्राह्मण, छत्तीसगढ़ी माई-माता, मराठी आई-माँ, गुजराती अथाणुं -अचार, काठियावाड़ी काठी-कद, मारवाड़ी चोखा-सुंदर, मेवाड़ी बखाण-बखान, हाड़ौती चुनड़-चुनरी, ऊबटणो-उबटन, शेखावाटी बावळी-बावली, ढुंढाड़ी आंपा-आप, रांखो-रखिए, कन्नौजी बिट्टी-बेटी, बैंसवाड़ी कलसा-कलश, हरियाणवी बाळना - बालना या जलाना, पंजाबी यकदम-एकदम आदि, डोगरी जजमान-यजमान, गड़वाली, बन/बोण-वन, असमी मोय-मैं, तोय/तुमि-तुम, बोडो राजि-राजी/सहमत, खुसि-खुशी, बांग्ला जॉल-जल, ओनुग्रहो-अनुग्रह, गल्प-गप्प/कहानी, उ या तुमे- तुम, चालिबा-चलो, संथाली सुकरी-सुअर, कोंहडा-कुम्हड़ा, तमिल तपला-तबला, तुण्टु-टुकड़ा, तेलुगु कष्टमु-कष्ट, तड़रारु- तकरार, मलयालम मात्रं-मात्र, स्थलत्त्-जगह, कन्नड़ लवंग लौंग, सक्करे-शकर, कोंकड़ी भितरलें-भीतरी, काळोख-कालिख, अंधेरा आदि। हिंदी ने विदेशी भाषाओं से शब्द ग्रहण में भी कोताही नहीं की है। उदाहरण-अरबी-मतलब, कीमत, फरसी- आराम, दूकान, तुर्की-कनात, नाशपाती, पुर्तगाली-अनन्नास, गमला, फ्रांसिसी-पुलिस, काजू, स्पेनी-सिगरेट,सिगार, जापानी-रिक्शा, हाइकु, रुसी-स्पुतनिक, जार, ग्रीक-सुरंग, चीनी-चाय, लीची, लैटिन-ओशो, सुपर, बोनस, डच-ड्रिल, बम, फ्रेंच-मेयर, मीनू, सूप, अंग्रजी-सर, हेलो, अंकल आदि।

2. मुहावरे एवं कहावतें- हिंदी ने देश के विविध अंचलों की बोलियों से उनमें प्रचलित मुहावरे ग्रहण किए हैं। मुहावरे व कहावतें भाषा को संकेत में कम शब्दों में गहन अर्थ व्यक्त करने में समर्थ तथा बनाते हैं। हिंदी में बुंदेली, ब्रज, भोजपुरी, अवधी आदि के अनगिनत मुहावरे हैं। उदाहरण-अकेलो चना भार नईं फोरत (अकेला कहना भाड़ नहीं फोड़ता), घी देत बामन नर्रात, करिया अक्षर भैंस बराबर आदि।

3. छंद - अलग-अलग बोलिओं में उनके क्षेत्र के मौसम, फसल, पर्व, लोक प्रथाओं आदि के अनुरूप छंदों का विकास हुआ है। अपभ्रंश से होते हुए ये छंद हिंदी में भी आ गए हैं। हिंदी ने केवल बोलिओं ही नहीं अन्य देशी-विदेशी भाषाओं से भी छंद ग्रहण कर खुद को समृद्ध किया है। उदाहरण पंजाबी से माहिया, बुंदेली से आल्हा, मराठी से लावड़ी, फारसी से रुबाई, गजल आदि, अंग्रेजी से सॉनेट, जापानी से हाइकु, ताँका, बाँका, स्रैर्यु आदि।

सारत: हिंदी विश्ववाणी है इसलिए वह आवश्यकतानुसार विश्व की किसी भी भाषा-बोली से शब्द ग्रहण करती और उसे देती है। हमें हिंदी की उदारतावादी सहिष्णुता को अपने जीवन में भी उतरना चाहिए तभी हम विश्व मानव बनकर वसुधैव कुटुंबकं अयमात्मा ब्रह्म और वैश्विक नी म की उदात्त विरासत के पात्र हो सकेंगे।

आचार्य संजीव वर्मा 'सलिल'
वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार
नेपियर टाउन, जबलपुर
मो.: 9425183244



जी 20 शिखर सम्मेलनों की उपादेयता : एक दृष्टि



मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, पहले परिवार फिर समाज और इसी क्रम में प्रदेश और देश की संरचना होती है । विविध कारणों से हमारे रंग रूप भाषा खान-पान और व्यवहार में विविधता होती है । जैसा कि भारतेंदु जी ने वर्षों पूर्व कहा था - '**चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी। बीस कोस पर पगड़ी बदले, तीस कोस पर घानी।**' अर्थ सहज और स्पष्ट है विश्व की बात छोड़िये हमारे देश और प्रदेश में भी हमें तरह-तरह के रीति-रिवाज और परम्पराएं, संस्कार और संस्कृतियां मिल जाएंगी जो अनेक भौगोलिक और सामाजिक कारणों से निर्मित होती हैं और जो हमें अपने पूर्वजों से विरासत के रूप में प्राप्त होती हैं और यही हमारी पहचान होती है। इन सब विविधताओं के अलावा सभी प्राणियों में कुछ वैश्विक समानताएं भी होती हैं जो हमें एक-दूसरे से जोड़ती हैं जैसे जीवित रहने के लिए सांस हम सब लेते हैं यानी शुद्ध वायु हम सबकी आवश्यकता है, प्यास सबको लगती है तो पीने के लिए तथा फसलों के लिए जल सभी को चाहिए, इसके साथ ही भूख सबको लगती है यानी भोजन हम सबकी जरूरत है और इसी क्रम में फिर सुरक्षा, स्वास्थ्य और शिक्षा भी हम सबकी साझी आवश्यकता है । मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है उसमें प्रगति और प्रतिस्पर्धा की भावना सदैव से रही है और वह आगे बढ़ने के लिए दूसरे के अधिकारों का अतिक्रमण करने में भी पीछे नहीं रहता, यहां जो शक्तिशाली है वह कमजोर पर शासन करता रहा है। इस तरह भेदभाव और असमानता के कारण समाज में संघर्ष उपजता है। इस संघर्ष से लड़ाई-झगड़े और युद्ध की स्थिति उतपन्न होती है जो हमारी सामाजिकता, शांति और विकास के मार्गों को अवरुद्ध कर हमें और हमारे समाज को अशांति और विनाश के मार्ग पर ले जाते हैं।

ऐंसी विषम परिस्थितियों से निबटने के लिए मनुष्य संगठित होता रहा है और यह संगठन हम घर से लेकर प्रदेश, देश और वैश्विक स्तर पर देखते रहे हैं। जिस व्यक्ति, समाज और परिवार का संगठन जितना मजबूत होगा वह विविध समस्याओं से आसानी से निपट सकता है। ऐसी सब समस्याओं से वैश्विक स्तर पर निपटने के लिए विभिन्न संगठन सदियों से हमारे बीच मौजूद रहे हैं और उन्होंने मानवता की रक्षा के लिए अपनी भूमिका का निर्वहन बड़े महत्वपूर्ण ढंग से किया है। ऐसे वैश्विक संगठनों में से एक है-जी-20 समूह । इसकी स्थापना वर्ष 1997

में विश्व को गम्भीर आर्थिक संकट से बचाने को लेकर हुई थी और उस समय इस संगठन का नाम जी–7 था जिसकी पहली बैठक अमेरिका के वाशिंगटन शहर में हुई थी । तब से लेकर हाल ही में भारत में हुए 18वें शिखर सम्मेलन जो कि जी–20 के नाम से नई दिल्ली के प्रगति मैदान में भारत मण्डपम भवन में आयोजित हुआ और इस सम्मेलन की अन्य विशेषताओं के अतिरिक्त इसमें भारत की पहल पर अफ्रीकी संघ को जिसमें 55 अफ्रीकी देश सम्मिलित हैं को स्थाई सदस्यता प्रदान करना है। अब इस संघ की जो आगामी बैठक 19 वें शिखर सम्मेलन के रूप में 2024 में ब्राजील में होगी, उसमें यह संगठन जी –21 शिखर सम्मेलन के नाम से आयोजित होगा।

निश्चित रूप से इस सम्मेलन के भारत में सफलता पूर्वक आयोजित होने से भारत की विश्व में धाक जमी है । भारत एक वैश्विक नेतृत्व करने वाले राष्ट्र के रूप में उभरा है, जो हर देशवासी के लिए गर्व का विषय है । निश्चित रूप से वर्तमान समय भारत का समय है। भारत ने विकासशील देशों की जिस मजबूती के साथ अगुवाई की है वह काबिले तारीफ है। अब विकसित राष्ट्र अपनी मनमानी नहीं कर सकते, अपने जबरिया निर्णय शेष विश्व पर नहीं थोप सकते । भारत में सम्पन्न हुए इस वैश्विक सम्मेलन में निश्चित रूप से विकासशील देशों को आर्थिक सहायता मिलेगी, विश्व बैंक और आई एफ एम की शर्तों में सुधार होंगे, खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा पर सभी राष्ट्र मिलकर बेहतर दिशा में काम करेंगे। जी–20 समूह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विश्व के प्रभावशाली राष्ट्रों का शिखर समूह है, इसके अधीन विश्व की 80 प्रतिशत अर्थव्यवस्था आती है । भारत के अलावा इस संगठन में अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, कनाडा, जापान, ब्राजील, आस्ट्रेलिया, अर्जेंटीना, तुर्किये, दक्षिण कोरिया, इटली ,सऊदी अरब, मैक्सिको, इंडोनेशिया, यूरोपीय संघ जैसे राष्ट्र सम्मिलित हैं, इसके साथ ही इसमें बंगलादेश, मिस्र, मॉरीशस, नीदरलैंड, सिंगापुर, स्पेन, नाइजीरिया, ओमान, यू. ए. ई. को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया गया ।

यह जी–20 शिखर सम्मेलन इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इसमें संयुक्त राष्ट्रसंघ, वर्ल्ड बैंक, विश्व स्वास्थ्य संगठन, वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन जैसे संगठन भी अपनी सक्रिय भागीदारी करते हैं । वैश्विक स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण निर्णय इस आयोजन में हुए हैं। इस सम्मेलन के द्वारा चीन की मनमानी रोकने और उसकी नकेल कसने की दिशा में भारत–मिडिल–ईस्ट–यूरोप कॉरिडोर के निर्माण का प्रस्ताव तथा ओपेक देशों की मनमानी रोकने के लिए तेल बाजार में बायो–फ्यूल निर्माण करने, अलाइंस बनाने पर सहमति तथा रूस यूक्रेन युद्ध को रोकने की दिशा में मध्यस्थ के रूप में भारत की सुदृढ़ भूमिका एक बड़ा कदम है । जी–20 सम्मेलन में विश्व के 43 वैश्विक नेताओं का सम्मिलित होना एक बड़ी उपलब्धि है। अधिकतर मसलों पर आम सहमति से प्रस्ताव पारित हुए और विवाद की स्थिति नहीं बनी यह भारत की कूटनीतिक सफलता है। निश्चित ही यह सम्मेलन जलवायु परिवर्तन, क्रिप्टोकरेंसी, लैंगिक असमानता सहित विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर ठोस कदम उठाए जाएंगे। इसके साथ ही यह वैश्विक सम्मेलन राष्ट्रभाषा हिन्दी को वैश्विक स्तर पर सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

वर्ष 1977 में तत्कालीन विदेश मंत्री श्री अटलबिहारी बाजपेई ने संयुक्त राष्ट्र संघ में पहली बार हिंदी में भाषण देकर हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलवाई थी और वर्ष 2002 में प्रधानमंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्रसंघ को हिंदी में उनका सम्बोधन हिंदी को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था । तब से लगभग चार दशकों का समय व्यतीत हो चुका है और एक बार पुन: वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी हिंदी को वैश्विक मंचों पर सदैव स्थापित करते रहे हैं। उनके प्राय: अंतराष्ट्रीय भाषण हिंदी में ही होते हैं । अभी वर्तमान में नई दिल्ली में जो जी –20 शिखर सम्मेलन सम्पन्न हुआ, उसमें हमारे प्रधानमंत्री जी ने दो दिन तक वैश्विक नेताओं से जो चर्चा की वह हिंदी माध्यम से ही की। इस सम्मेलन में भोजन, वेशभूषा और संस्कृति का सम्पूर्ण आधार भी विशुद्ध भारतीय था। सम्पूर्ण आयोजन की कार्यवाही में इस तरह से हिंदी को प्राथमिकता के साथ प्रधानता देना, सचमुच हर हिंदी प्रेमी भारतीय के लिए गौरव का विषय है, निश्चित रूप से जब हम राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सुदृढ़ होंगे, तो विश्व में हमारी भाषा भी सुदृढ़ और मजबूत होगी। भारत में आयोजित यह वैश्विक सम्मेलन बहुत सफल और भारत के लिए हर दृष्टिकोण से उपयोगी रहा है । इस सम्मेलन के आयोजन से हिंदी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा बनने में और बल मिलेगा और मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि हमारी राजभाषा हिंदी शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक राजभाषा घोषित की जाएगी।

✍ **घनश्याम मैथिल 'अमृत'**
सेवानिवृत्त वरिष्ठ तकनीशियन
साडिपुका, प.म. रेल, भोपाल
मो. : 9589251250



पश्चिम मध्य रेलवे पर स्काउटिंग एवं गाइडिंग



स्काउटिंग / गाइडिंग विश्व का अग्रणी युवा आंदोलन है, जिसका विस्तार विश्व के 164 देशों में है। भारत स्काउट्स एवं गाइड्स को अंतर्राष्ट्रीय संगठन World Organization of the Scout Movement (WOSM) तथा World Association of Girl Guides and Girl Scouts(WAGGGS) से संबंद्धता प्राप्त है। पश्चिम मध्य रेल, राष्ट्रीय संगठन भारत स्काउट्स एवं गाइड्स की एक इकाई है जो राज्य के रूप कार्य करती है।

स्काउटिंग/गाइडिंग आंदोलन के आधारभूत तत्व

1. परिभाषा - भारत स्काउट्स एवं गाइड्स युवाओं के लिए एक स्वयंसेवी, गैर राजनीतिक, शैक्षणिक आंदोलन है जो किसी मूल, जाति एवं वंश के भेवभाव से मुक्त प्रत्येक व्यक्ति के लिए खुला है। यह 1907 में संस्थापक लार्ड बैडन पॉवल द्वारा संकल्पित किये गये लक्ष्य, सिद्धांत तथा पद्धति के अनुरूप है।

2. उद्देश्य– स्काउटिंग/गाइडिंग का उद्देश्य युवाओं के विकास में इस तरह योगदान करना है, जिससे उनकी पूर्ण शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक तथा अध्यात्मिक अन्त: शक्तियों का विकास हो सके, ताकि वे व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार नागरिकों के रूप में, स्थानीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों के सदस्यों के रूप में उपयोगी सिद्ध हो सकें।

3. सिद्धांत– स्काउटिंग/गाइडिंग निम्न तीन सिद्धांतों पर आधारित है जो इसके मौलिक नियमों एवं विश्वास को दर्शाते है।

- **ईश्वर के प्रति कर्त्तव्य :–**
  अध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति दृढ़ता, इन्हें अभिव्यक्त करने वाले धर्म के प्रति वफादारी तथा इनके द्वारा बताये गये कर्त्तव्यों को स्वीकार करना।
- **दूसरों के प्रति कर्त्तव्य :–**
  स्थानीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति, समझ और सहयोग की भावना से समन्वय स्थापित करते हुये अपने देश के प्रति वफादारी। अपने साथियों की गरिमा तथा प्राकृतिक संसाार की अखंडता के प्रति अभिज्ञान तथा सम्मान के साथ समाज के विकास में भागीदारी।
- **स्वयं के प्रति कर्त्तव्य :**
  आत्म विकास के लिए उत्तरदायित्व का निवर्हन।

4. पद्धति–

- प्रतिज्ञा तथा नियम
- स्वयं करके सिखना
- वयस्क नेतृत्व के तहत छोटे समूहों की सदस्यता जिसमें प्रगतिशील खोज निहित हो तथा चारित्रिक विकास, क्षमता प्राप्ति, आत्मविश्वास, विश्वसनीयता तथा नेतृत्व करने एवं सहयोग करने की योग्यता की दिशा में प्रशिक्षण एवं स्वशासन के प्रति सम्मान एवं उत्तरदायित्व की स्वीकृति हो।
- प्रतिभागियों की रूचियों पर आधारित विभिन्न गतिविधियों के प्रगतिशील तथा प्रेरक कार्यक्रम जिनके अंतर्गत खेल, उपयोगी कौशल तथा सामुदायिक सेवा है जो अधिकतर बाहरी वातावरण में प्रकृति के संपर्क में हो।

5. स्काउट/गाइड/रोवर/रेंजर प्रतिज्ञा :

मैं, मर्यादापूर्वक प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं यथाशक्ति ईश्वर और अपने देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करूँगा/करूँगी, दूसरों की सहायता करूँगा और स्काउट/गाइड नियम का पालन करूँगा/करूँगी।

कब/बुलबुल प्रतिज्ञा

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं ईश्वर और अपने देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करूँगा/करूँगी कब नियम का पालन करूँगा/करूँगी तथा प्रतिदिन भलाई का एक कार्य करूँगा/करूँगी।

स्काउटिंग/गाइडिंग के माध्यम से –

हम प्राप्त करते हैं	–	युवा सशक्तिकरण
हम बनाते हैं–	–	सक्रिय नागरिक
हम विकसित करते हैं	–	जीवनपर्यन्त मूल्य और कौशल
हम व्यस्त रखते हैं	–	शान्ति शिक्षा में

स्काउटिंग/गाइडिंग के चार स्तंभ, जिनके बिना इसकी परिकल्पना अधूरी है।

- चरित्र निर्माण एवं कार्य कुशलता
- स्वास्थ्य एवं शक्ति
- हस्तकला एवं कौशल
- सेवा

स्काउट/गाइड के विभिन्न अनुभाग

स्काउट विंग:

इस विंग के अंतर्गत बालकों को उनके आयुवर्ग के अनुसार निम्नलिखित अनुभागों में नामांकित किया जाता है, जिन्हें वयस्क लीडरों द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है।

अनुभाग	आयुवर्ग	आदर्श वाक्य
बन्नी	03 से 05 वर्ष	मुस्कराते रहो
कब	05 से 10 वर्ष	कोशिश करो
स्काउट	10 से 17 वर्ष	तैयार
रोवर	15 से 25 वर्ष	सेवा

गाइड विंग:

इस विंग के अंतर्गत बालिकाओं को उनके आयुवर्ग के अनुसार निम्नलिखित अनुभागों में नामांकित किया जाता है, जिन्हें वयस्क लीडरों द्वारा प्रशिक्षित किया जाता है।

अनुभाग	आयुवर्ग	आदर्श वाक्य
बन्नी	03 से 05 वर्ष	मुस्कराते रहो
बुलबुल	05 से 10 वर्ष	कोशिश करो
गाइड	10 से 17 वर्ष	तैयार
रेंजर	15 से 25 वर्ष	सेवा

भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के राष्ट्रीय मुख्यालय:

- **राष्ट्रीय मुख्यालय**
  लक्ष्मी मजूमदार भवन, 16 महात्मा गांधी मार्ग,
  इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली- 110002
- **राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र**
  भारत स्काउट्स एवं गाइड्स
  पचमढ़ी (मध्य प्रदेश)
- **राष्ट्रीय एडवेंचर संस्थान**
  भारत स्काउट्स एवं गाइड्स
  पचमढ़ी (मध्य प्रदेश)

पश्चिम मध्य रेल पर स्काउटिंग/गाइडिंग

संक्षिप्त इतिहास : वर्ष 2003 में पश्चिम मध्य रेल को नया जोन बनने के बाद भी भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, राष्ट्रीय मुख्यालय, नई दिल्ली से स्वतंत्र राज्य के रूप में मान्यता नहीं मिलने के कारण पश्चिम मध्य रेल के तीनों मंडल अपनी पुरानी रेलवे के साथ पंजीकृत थे। अत: जबलपुर एवं भोपाल मंडल की स्काउटिंग गतिविधियां मध्य रेल, मुम्बई से संचालित होती थीं।

वर्ष 2007 से रेलवे बोर्ड के निर्देशानुसार, रेलवे बोर्ड द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों में सभी नये जोनल रेलवे अनौपचारिक रूप से रेलवे राज्य के रूप में भाग लेने लगे। साथ ही साथ रेलवे बोर्ड द्वारा आयोजित बैठकों एवं अन्य प्लेटफार्मों पर भी नये जोनों को राष्ट्रीय मुख्यालय से राज्य के रूप में मान्यता दिलाने हेतु मांग उठने लगी। रेलवे बोर्ड के प्रयास से अंतत: रेलवे स्काउट-गाइड बोर्ड तथा राष्ट्रीय मुख्यालय के बीच एएमआईयू हस्ताक्षर हुये तथा 30 नवंबर 2014 को आयोजित राष्ट्रीय परिषद की बैठक में सभी नये जोनों को राज्य के रूप में मान्यता देने हेतु निर्णय लिया गया। इसी कड़ी में 09 दिसम्बर, 2015 को भारत स्काउट्स एवं गाईड्स, राष्ट्रीय मुख्यालय द्वारा पश्चिम मध्य रेल को संबंद्ध करने के लिए चार्टर जारी किया गया तथा पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ।

इसी प्रकार पश्चिम मध्य रेल के तीनों मंडल जबलपुर, भोपाल एवं कोटा राज्य मुख्यालय के माध्यम से जिला संघ के रूप में पंजीकृत है।

सदस्यता :- पश्चिम मध्य रेल क्षेत्र में आने वाले सभी रेल कर्मचारी एवं उनके आश्रित सदस्य स्काउटिंग/गाइडिंग की सदस्यता ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क

अनुभाग	सदस्यता शुल्क
कब/बुलबुल	5/-
स्काउट/गाइड	10/-
रोवर्/रेंजर	10/-
वयस्क लीडर	50/-

राज्य मुख्यालय का पता

पश्चिम मध्य रेल भारत स्काट्स एवं गाइड्स

राज्य मुख्यालय, महाप्रबंधक कार्यालय, पश्चिम मध्य रेल जबलपुर (म.प्र.) 482001, वर्तमान में पश्चिम मध्य रेल में जबलपुर, नई कटनी जंक्शन, सतना, भोपाल, रानी कमलापति, इटारसी, कोटा, सवाईमाधोपुर, गंगापुर सिटी, हिंडौन सिटी, भरतपुर इत्यादि स्थानों पर यूनिटें संचालित हो रही हैं।

अवार्ड/पुरस्कार

कब-बुलबुल के लिए राष्ट्रीय स्तर पर 'गोल्डेन ऐरो आवार्ड' तथा स्काउट, गाइड रोवर एवं रेंजर को राष्ट्रपति अवार्ड दिया जाता है जबकि राज्य स्तर पर स्काउट, गाइड, रोवर एवं रेंजर को राज्य पुरस्कार प्रमाण पत्र महाप्रबंधक द्वारा दिया जाता है। रेल कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों को स्काउटिंग/गाइडिंग गतिविधियों के लिए मिलने वाले विशेष सुविधायें :-

विशेष आकस्मिक अवकाश :- स्काउटिंग / गाइडिंग गतिविधियों के लिए रेल कर्मचारियों को 30 दिन तथा लीडर ट्रेनर/सहायक लीडर ट्रेनरी को 45 दिन का विशेष आकस्मिक अवकाश प्रदान किया जाता है।

विशेष पास : स्काउटिंग/गाइडिंग गतिविधियों में भाग लेने हेतु रेल कर्मचारियों एवं उनके आश्रितों को मुफ्त विशेष पास जार किया जाता है।

वित्तीय सहायता : स्काउटिंग/गाइडिंग गतिविधियों के लिए रेलवे बोर्ड द्वारा प्रतिवर्ष कर्मचारी हित निधि से अनुदान दिया जाता है।

स्काउट-गाइड कोटे के अंतर्गत भर्ती: प्रतिवर्ष मुख्यालय स्तर पर पे लेवल 02 से 02 कर्मचारियों की भर्ती तथा मंडल स्तर पर पे लेवल 01 में 02 कर्मचारियों की भर्ती होती है।

राज्य रैली : यह जोनल रेलवे स्तर का सबसे बड़ा इवेंट होता है जिसका आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। इसमें मुख्यालय सहित तीनों मंडलों के स्काउट-गाइड सदस्य भाग लेतें है।

अखिल भारतीय रेल जम्बूरेट : यह रेलवे स्तर का सबसे बड़ा इवेंट होता है, जिसका आयोजन द्विवार्षिक किया जाता हैं। इसमें सभी जोनल रेलवे के लगभग 5000 स्काउट/गाइड भाग लेतें है।

राष्ट्रीय जम्बूरी : यह राष्ट्रीय स्तर का सबसे बड़ा इवेंट होता है, जिसका आयोजन प्रत्येक 04 वर्षों में किया जाता है। इसमें सभी राज्यों एवं जोनल रेलों के लगभग 40 हजार स्काउट-गाइड भाग लेतें है।

कोरोना काल में पश्चिम मध्य रेल के विभिन्न स्टेशनों पर जल सेवा

पश्चिम मध्य रेल, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, राज्य मुख्यालय, जबलपुर के निर्देशन में पश्चिम मध्य रेल के तीनों जिला संघों के अंतर्गत आने वाले जबलपुर, कटनी जं, भोपाल, रानी कमलापति , इटारसी, कोटा, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, बारा इत्यादी प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों के लिए जल सेवा शिविर लगाया गया।

इस प्रकार पश्चिम मध्य रेल पर स्काउटिंग एवं गाइडिंग अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह पूर्ण ईमानदारी एवं निष्ठा से कर रहा है।

सुवीर श्रीवास्तव
उप मुख्य परिचालन प्रबंधक (माल भाड़ा) एवं राज्य सचिव, भारत स्काउट एवं गाइड, पमरे
मो. : 9752415904



स्काउट/गाइड यूनिफार्म













वंदे भारत-भारतीय रेल के एक नये युग की शुरूआत

अमेरिकी सड़के इसलिये अच्छी नहीं है, क्योंकि अमेरिका अमीर है, अमेरिका अमीर है क्योंकि अमेरिकी सड़के अच्छी है।

-जॉन एफ केनेडी,पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति



परिवहन व्यवस्था किसी राष्ट्र की समृद्धि में कितनी महत्वपूर्ण होती है इससे यह प्रमाणित होता है। भारत की अर्थव्यवस्था को गतिमान करने के लिये परिवहन के क्षेत्र को अधिक गतिमान होना कितना आवश्यक है, यह इसी एक वाक्य में परिलक्षित होता है।

इसी दिशा में सरकार द्वारा सभी परिवहन माध्यमों (जल परिवहन) सड़क मार्ग परिवहन, रेलमार्ग परिवहन एवं हवाईमार्ग परिवहन में नई संभावनाओं को खोजा जा रहा है एवं उपलब्ध परिवहन व्यवस्था को उन्नत किया जा रहा है। नये जलमार्ग स्थापित किये जा रहे है। सड़कमार्ग परिवहन में अमूलचूल परिर्वतन हमें दिखाई दे रहा है। भारत की भौगोलिक एवं वर्तमान आर्थिक स्थिति को देखते हुये भारतीय रेल की उपयोगिता अन्य परिवहन माध्यमों से अधिक है। अन्य परिवहन मार्गों के साथ-साथ रेलवे मार्ग परिवहन को भी उन्नत एवं गतिमान करने की आवश्यकता है, क्योंकि इसे भारत की परिवहन व्यवस्था का नाड़ी तंत्र भी कहा जाता। कुछ समय पहले तक तो भारत की आर्थिक राजधानी कहे जाने वाले मुम्बई शहर में तो लोकल ट्रेन के बिना परिवहन की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, आज भारत के अनेक शहरों में मेट्रो ट्रेनों का संचालन किया जा रहा है। भारतीय रेल परिवहन को परिचालन की दृष्टि से मुख्य रुप से दो भागों में बांटा जा सकता है, पहला मालभाड़ा एवं दूसरा यात्री यातायात। मालभाड़े के लिये अलग से तीसरी रेलवे लाइन बिछाई जा रही है। यात्री गाड़ियों में यात्री सुविधायें एवं गति इन दोनों विषयों पर कार्य किया जा रहा है। पिछले कई दशकों से भारतीय रेलवे की यात्री गाड़ियों, मेल-एक्सप्रेस ट्रेनों की औसत गति 55-65 कि.मी. प्रति घंटे है, इसके उपरान्त शताब्दी, राजधानी ट्रेन की औसत गति 70-80 कि.मी. प्रति घंटे की है। अब वंदे भारत ट्रेनों की औसत गति 90-100 कि.मी. प्रति घंटे की है।

ट्रेनों की औसत गति बढ़ाने के लिये बहुत सारे तकनीकी बदलाव करने होते हैं, ये सब हमें दिखाई नहीं देते परन्तु महत्वपूर्ण एवं अधिक खर्चीले होते हैं। हमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि हमारे संसाधन भी बहुत सीमित है। इन सभी पहलुओं से देखें तो **वंदे भारत एक्सप्रेस** भारतीय रेलवे की एक बड़ी उपलब्धि है।

किसी भी सेवा या वस्तु का मूल्य तभी उचित होता है, जब उसकी तुलना उसी प्रकार की अन्य सेवा या वस्तु से की जाये। अब हम कार गति की तुलना ट्रैक्टर की गति से तो नहीं कर सकते न ही ट्रैक्टर की ताकत की तुलना कार की ताकत से कर सकते है। वंदे भारत को केवल किराये की दृष्टि से दूसरी भारतीय ट्रेनों से तुलना करना उचित नहीं है। हाँ ! यदि तुलना करनी ही है तो विकसित देशों की इसी श्रेणी की गाड़ियों से तुलना करनी चाहिये, तो निश्चित रुप से भारत की 'वंदे भारत' ही श्रेष्ठ होगी। तकनीकी क्षेत्र में भी भारतीय रेल को आत्म निर्भर बनाने के लिये **मेक इन इंडिया** की परिकल्पना को वंदे भारत के माध्यम से रेलवे ने साकार किया है।

एक बात और अच्छी सड़कों पर जब टोल लिया जाने लगा था तो उसे भी हम भारतीयों ने सहज ही स्वीकार नहीं किया था, लेकिन अब परिस्थिति बिल्कुल उलट है, नागरिकों को अच्छी सड़के चाहिये और वो इसके लिये सेवाकर भी देने को तैयार है।

वंदे भारत एक्सप्रेस गति एवं यात्री सुविधायें बढ़ाने की दिशा में एक बड़ी तकनीकी उपलब्धि है। एक बार सप्ताहान्त (बीकएण्ड) में या जब आपका मन हो घूमने के लिये सड़क मार्ग के बजाय वंदे भारत से यात्रा कीजिये। अपनी भारतीय रेल की बढ़ती हुई गति एवं विश्वस्तरीय सुविधाओं का अनुभव कीजिये।

बसंत गोरे
मुख्य आरक्षण पर्यवेक्षक,डाटाबेस
वाणिज्य विभाग, पमरे, जबलपुर
मो. 9752827730



व्यंग्य

खुदाई चालू आहे

हमारा देश आगे बड़ रहा है, जगह–जगह खुदाई जारी है। गाँवों में सड़कें, नहरें, तालाब बनाने के लिए खेतों के आसपास खुदाई जारी है। नगरों में निरंतर यहाँ वहाँ नालियाँ बनाने, बिजली टेलीफोन बगैरा के तार निकालने के लिए बेचारी सड़कें आदिकाल से खोदी जाती रही हैं, जैसे ही नई सड़क बनी नहीं कि खोदने वाले तुरंत प्रकट हो जाते हैं, हमने एक दिन उनसे पूछा कि भाई दो दिन पहले ये केबल नहीं डाल सकते थे वे बोले नहीं साहब जिस परमानंद की प्राप्ति नई सड़क खोदने में होती है वो पुरानी में कहाँ साहब नगर निगम को दोबारा सड़क बनाने का पूरा पैसा भी दिया जाता है, ये अलग बात है कि नगर निगम कब इसकी सुध लेगा यह उसे खुद भी नहीं मालूम होता, जहाँ तक मेरी अपनी बात है तो मुझे तो खुदा से उतना डर नहीं लगता जितना खुदाई से लगता है, चूँकि मैं सरकारी मकान में रहता हूँ इसलिए यह डर और अधिक होता है कि जाने कब ठेकेदार के आदमी आ जाएँ और घर में, घर के सामने या घर के पीछे और कब खुदाई शुरू कर दें पता नहीं चलता। एक बार स्थानांतरण के बाद जब मैंने अपने सरकारी घर के पिछले हिस्से में सुंदर अमेरिकन कारपेट घास लगाई, उसमें रौनक आनी शुरू हुई ही थी कि खोदने वाले प्रकट हो गए बोले सर यहाँ हमें चैम्बर बनाना है और सीवर लाइन निकालना है और गई घास चैम्बर में, भैंस तो थी नहीं जो पानी में जाती।

कुछ सड़कों को तो खोदना ही नहीं पड़ता साहब, वे तो अपने आप ही खुद जाती हैं, इसी खुदाई से न जाने कितने छोटे बड़े पेट पलते हैं, जी.डी.पी. ग्रोथ मैंटेन रहती है, अर्थव्यस्था मजबूत होती है। बरसात में खुदी हुई सड़कों पर चलने का अलग ही आनंद होता है, अगर आप नीचे देखकर नहीं चल रहे तो ये आनंद दोगुना हो जाता है, गढ्डा कितना गहरा है,पता ही नहीं चलता, जब पानी में धम्म से आप गिरते हैं, फिर देखते हैं की कोई देख तो नहीं रहा, तो जो लोग आपको देख हैं उन्हें परमसुख प्राप्त होता है, गढ्डों से बच–बच के निकलते हुए भी पास से गुजरते हुए कोई कार जब किसी के कपड़ों पर मॉडर्न आर्ट बनाकर चली जाती है, बड़ा मजा आता है, कभी–कभी कार का शीशा खुला होने पर कार वाले भी इसका थोड़ा बहुत सुख भोग ही लेते हैं, खुदा की खुदाई को भले ही कोई नहीं जानता हो, लेकिन नगर निगम की खुदाई से जन–जन अच्छी तरह वाकिफ होता है। गली मोहल्ले में जब खुदाई होती है तो धूल भी खूब उड़ती है, इसी बहाने माँ भारती के चरणों की धूल साहब लोगों के मस्तक तक भी पहुँच जाती है।

लोग कहते हैं कि जमीन पर खुदा नहीं मिलता, उसके लिए जन्नत में जाना पड़ता है, लेकिन आजकल जन्नत में जाने की आवश्यकता नहीं है, यहाँ तो जगह–जगह खुदा मिलता है, एक अज्ञात लेखक का एक जोक जो खूब चला, आपके सामने रख रहा हूँ, पहली लाइन पढ़ो तो ऐसा लगता है कि कोई बहुत बड़ी दार्शनिक बात कही जा रही है, बाद में पता चलता है कि वो तो कुछ और ही है, आप भी पड़ लीजिये।

यहाँ भी खुदा है, वहाँ भी खुदा है,
जहाँ खुदा नहीं हैं, वहाँ कल खुदेगा

बहुत से शायरों ने इसके ऊपर और भी शेर कहे हैं, देखिये,

ज़ाहिद शराब पीने दे मस्जिद में बैठ कर
या वो जगह बता दे जहाँ पर खुदा न हो

आज वो शायर होता तो लिखता,

ज़ाहिद शराब पीने दे सड़कों पे बैठ कर
या वो जगह बता दे जहाँ पर खुदा न हो

एक शायर कहते हैं–

मस्जिद में बैठ कर पीना नहीं शराब
बोतल है एक ही, उसको खुदा न माँग ले,
सबकी अपनी सोच है।
मैंने भी एक कोशिश की है, झेलिये,
सड़कों पे चल न तू , पीकर कभी शराब
चारों तरफ खुदा है, मुश्किल यहाँ बहुत



खुदा की खिदमत करना तो आसान है लेकिन खुदा की खुदाई तक पहुँचना बड़ा ही दुरूह कार्य है, खुदा का घर बनाना हो तो नींव खोदनी ही पड़ती है चाहे जमीन में हो, चाहे दिल में,सांसारिक लोगों के लिए खुदाई आजकल कमाई का बहुत बड़ा जरिया है, जो जितना ज्यादा और गहरा खोदे उतना ही मालदार होता जाता है,। धीरे-धीरे उसके अंदर खुदाई का प्रवेश हो जाता है और फिर वह अपने आपको खुदा से कमतर नहीं समझता, आजकल तो खुदाई की बड़ी-बड़ी और गजब की मशीनें आ गईं जरा सी जगह में खूब गहरी खुदाई कर लेतीं हैं, कुछ लोग गड्ढा खोद कर घर बना लेते हैं, और वहीं कुछ लोगों के घरों को खोद कर गड्ढा बना दिया जाता है, जनतंत्र में जन हमेशा तंत्र के हाथों में खुदता रहता है और उसकी किस्मत में तो सड़क हो या घर, हर जगह गड्ढे ही गड्ढे होते हैं।

कहीं पर लोग रेत खोद कर तेल निकाल लेते हैं, कहीं नदी में से रेत खोद ली जाती है, दोनों में ही खूब कमाई है और आजकल दोनों ही खूब चल रही हैं,कोयले की खुदाई के आवंटन में तो सरकारें भी मझदार में नाव जैसे डूब गईं, खोद-खोद कर सीबीआई जाँच चल रही है वो अलग, बाबा लोगों का नाम भी खुदाई के मामले में कम नहीं है वे भी कभी-कभी अपने चेलों को बता देते हैं कि तुम्हारे घर में धन गड़ा है, चेला तुरंत घर की खुदाई चालू कर देता है, मजे की बात यह है कि कभी-कभी उसे सोने की मुहरें, कीमती गहने, हीरे जवाहरात मटके में रखे मिल भी जाते हैं, बुजुर्गों से हमने यह भी सुना था कि जहाँ साँप की बाँबी होती है, वहाँ धन गड़ा होता है, धन की लालसा में लोग उसको भी खोदते रहते हैं, जबकि बिल कोई और बनाता है, साँप तो उस पर अपना कब्ज़ा जमा कर बैठ जाता है, धन कौन गाड़ता है पता नहीं। अभी पुरातत्व विभाग को ही ले लो, मोहन जोदड़ो, हड़प्पा और न जाने कितनी सभ्यताएँ खोद कर निकालीं हैं, साहब, जमीन हो या आदमी, जाने कितने राज अपने सीने में दबा के रखते हैं, खुदाई के बाद ही पता चलते है, जो दिल में है उसे खोद-खोद कर बाहर लाने का काम महिलाओं को खूब आता है पुरुष के मन की बात चाहे वो कितने ही अंदर क्यों न हो, निकाल ही लेतीं हैं, उसी तरह धरती को खोद कर पुरातत्व विभाग के लोग भी कई रहस्यों का पता लगाते हैं।

खुदाई के महत्व को समझकर अब तो हर आशिक खुदा से यह ही इल्तजा करेगा कि उसके महबूब की गली में जो सड़क बननी है उसकी खुदाई का ठेका उसे मिल जाए और सड़क नहीं महबूबा के दीदार के बहाने रोज वहाँ आता-जाता रहे। अंत में मैं तो यही कहूँगा आप भी अंदर और बाहर खुदाई करते रहें कुछ न कुछ आपको मिलता रहेगा, अन्दर की खुदाई में खुदा और बाहर की खुदाई में धन दौलत जिसने करी खुदाई हीरा मिला उसे बैठा रहा जमीन पर वो खाली रह गया ।

कविता

हिंदी दिवस मनाएं

हिंदी की पतवार थाम कर,
नदी प्रगति की पार कराएँ।
गौरव गान करें हिंदी का,
हर दिन हिंदी दिवस मनाएँ ....

माँ का आँचल, माँ की लोरी,
हिंदी हर रिश्ते की डोरी।
एक सूत्र में देश बाँधने,
हिंदी की गोदी में आएँ।।
हर दिन हिंदी दिवस मनाएँ ....

तन की, मन की, कुशल क्षेम से
ज्ञान-ध्यान, विज्ञान प्रेम से।
हिंदी की पावन सरिता में,
लगा डुबकियाँ मोती पाएँ।
हर दिन हिंदी दिवस मनाएँ ....

ऊँची शिक्षा शोध यहाँ हो,
कोई नहीं विरोध यहाँ हो।
समझें, समझाएँ हिंदी में,
राष्ट्र-प्रेम का अलख जगाएँ।
हर दिन हिंदी दिवस मनाएँ ....

अपनी माटी अपना घर है,
अपनों के सपनों का स्वर है।
हिंदी अपनी ही भाषा है,
सकल विश्व में इसे बढ़ाएँ।
हर दिन हिंदी दिवस मनाएँ ....

बसंत कुमार शर्मा
उप मुख्य परिचालन प्रबंधक (कोचिंग)
दक्षिण पूर्व मध्य रेल, बिलासपुर
मो.: 9479356702



भारतीय संस्कृति की प्राण आत्मा- ''वसुधैव कुटुम्बकम्''

भारतीय संस्कृति बहुआयामी है इसमें विलक्षण भूगोल, वैदिक युग, सिन्धु सभ्यता, बौद्ध प्रादुर्भाव और साथ ही पड़ौसी देशों की परम्पराओं का भी समावेश है, भारतीय संस्कृति ने सनातन, जैन, बौद्ध, सिख, ईसाई और इस्लाम सभी का समान रूप से पोषण किया है। इस उदार भाव के परिप्रेक्ष्य में एक पावन भावना है और वह है- 'वसुधैव कुटुम्बकम्' महाउपनिषद के अध्याय 6 के श्लोक क्रमांक 71 में वर्णित है-

अयं निजः परोवेति, गणना लघुचेतसाम।
उदार चरितानाम् तु, वसुधैव कुटुम्बकम्।।

अर्थात् यह मेरा है, यह तेरा है, इस प्रकार की गणना छोटे चित वाले लोग करते है, उदार हृदय वालों के लिये तो संपूर्ण पृथ्वी ही उनका परिवार है। यही मर्मस्पर्शी भाव ही हमारी भारतीय संस्कृति का मूल है, यदि हम प्रमाणों के माध्यम से इतिहास के पृष्ठों पर दृष्टिपात करें तो इस विषय को सरलता से आत्मसात करेंगे। लगभग पांच सौ बरस पूर्व गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीराम चरित मानस के अरण्य कांड में श्रीराम के माध्यम से कहा-

मैं अरू तोर-मोर मैं माया।
जेहि बस कीन्हे जीव निकाया।।

वहीं राजा बलि ने तेरा-मेरा की भावना से विरक्त होकर अपना सर्वस्व दान कर दिया था, तो कृष्णा ने गीता में कहा **'सामाजिक न्याय के युद्ध में तेरा-मेरा कुछ भी नहीं'** इसी प्रकार अनादिकाल से वर्तमान तक हमारी संस्कृति ने महाउपनिषद के इस महाकथ्य को लगातार ही पोषित किया है, और आज भी निरंतर जारी है। यदि हम विगत लगभग 70-80 वर्षों की ही बात करें, तो बहुत ही स्पष्ट रूप से हमारे पास साक्ष्य हैं कि किस प्रकार हम 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना के पक्षधर रहे हैं-

भारत पाकिस्तान बटवारे के समय हमने इसी पुनीत भाव के चलते 1947 में पाकिस्तान को दो किश्तों में 75 करोड़ की धनराशि दी, विशेष रूप से पूज्य महात्मा गांधी जी ने इस मानवीय कार्य की पहल की। सन् 1956 में जब मिश्र के द्वारा स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया तो इज़राइल, फ्रांस, ब्रिटेन ने मिलकर मिश्र पर हमला कर दिया, इन हालातों में विश्व शांति के दृष्टिगत पंडित नेहरू ने यू.एन.ओ. में भारतीय राजदूत के माध्यम से आवाज़ उठाई और युद्ध विराम हुआ। सन् 1971 में बांग्लादेश के मानव अधिकार के लिये हमने सत्य के पक्ष में युद्ध किया और विजय श्री के पश्चात् हमने वहाँ आधिपत्य न करके ससम्मान उन्हें उनका बांग्लादेश सौंप दिया।

इसी क्रम में सन् 2004 में श्रीलंका सुनामी संकट में भारत ने भारत के बाहर सबसे लंबा चलने वाला आपरेशन 'रेन बो' चलाया, हमने वहां लगभग 70 दिन राहत कार्य संपादित किया। सन् 2006 में अमरीका के भयंकर 'कटरीना' तूफान में भारत ने रेड क्रॉस अमरीका को पांच मिलियन डालर की धनराशि और 25 टन राहत सामग्री उपलब्ध करवाई। सन् 2008 में म्यांमार के नरगिस चक्रवात में, तो सन् 2011 में जापान के सुनामी संकट में हमने यथासंभव सहायता की। वहीं सन् 2015 में नेपाल के भयानक भूकम्प में भारत ने वहां पर 40 दिनों तक राहत कार्य किया। हमने यहां विश्राम नहीं लिया, वरन् विगत 10 वर्षों में विश्व की सबसे बड़ी मानवी संस्था डब्ल्यू. एफ.पी. (वर्ल्ड हेल्थ प्रोग्राम) के साथ मिलकर भुखमरी की कगार पे बैठे पड़ौसी मुल्कों को खाद्यान उपलब्ध कराया।

भारतीय संस्कृति न केवल वसुधैव कुटुम्बकम् अवधारणा की पोषक है, वरन् हम तो 'ब्रम्हाण्ड कुटुम्बकम्' की अवधारणा का पोषण करते हैं- संपूर्ण विश्व में हम ही तो हैं जो सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, वायु और यहाँ तक की वनस्पितियों को भी देव तुल्य आराधित करते है, हम ही तो हैं जो बहुत सम्मान और श्रद्धा के साथ नदियों को भी माँ कहकर बुलाते हैं, ये हमारा ही पुरूषार्थ है कि भारतीय संस्कृति में निर्जीव पत्थरों में भी प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। **18वां जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन**- 18वें जी-20 शिखर सम्मेलन का आयोजन 9 और 10 सितंबर 2023 को नई दिल्ली, भारत में किया गया । यह पहला अवसर था जब भारत की अध्यक्षता में यह सम्मेलन आयोजित किया गया। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात विश्व एक परिवार से बढ़कर 'एक परिवार, एक पृथ्वी, एक भविष्य' इस सम्मेलन की थीम रखी गई। इस सम्मेलन में भारत ने वैश्विक मुद्दों पर बेबाकी से अपनी राय रखते हुए सर्वसम्मति से निर्णायक निर्णय लिये। साथ ही अफ्रीकी

संघ को जी–20 का स्थायी सदस्य बनाकर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को और अधिक प्रबल किया है।

आइये भारतीय रेल को इस संदर्भ में परिभाषित करें

भारतीय रेल की यात्रा में रेल गाड़ी के डिब्बों में मंदिर–मस्जिद की भावना, रहन–सहन, भाषायें, पहनावे, छोटा और बड़ा सभी एक साथ यात्रा करते हैं, कभी भी किसी टिकिट काउन्टर से उसका धर्म, जाति या समुदाय पूछकर टिकिट जारी नहीं किये जाते, ये है वसुधैव कुटुम्बकम भावना का उज्ज्वल स्वरूप।

इस संदर्भ में यदि हम राजभाषा हिंदी की बात करें तो ज्ञात होगा कि राजभाषा हिंदी ने वसुधैव कुटुम्बकम की भावना को आत्मसात करते हुये, अनेकों विदेशी शब्दों को आत्मसात किया है– इरादा, चश्मा, डॉक्टर, औलाद, कलम, कानून, अल्मारी, आवाज़, अफ़सोस, गज़ल वगैरह।

हमें अमरीका का स्टैंच्यू ऑफ लिबर्टी उतना ही प्यारा है,
जितना मास्कों (रूस) का लाल तारा है।
हमारे लिये बीजिंग का स्वर्गीय महल,
मक्का–मदीना से कम पवित्र नहीं।
हमारे प्रहलाद की मौन तपस्यायें,
दुनिया की चौखट पर–
युद्ध, ईर्ष्या, वैमनस्य के,
हरिण्यकश्यप का, सीना चीर रहीं हैं।
हम शान्त हैं–मुस्कुरा रहे हैं,
क्योंकि हम तो वसुधैव कुटुम्बकम
की रीत के पाले हैं।
हाथ उठाकर–हाथ बढ़ाकर,
हम प्यार बाँटने वाले हैं।

संजय शर्मा
कार्यालय अधीक्षक,
यांत्रिक शाखा प.म.रे. भोपाल
मो.: 9630956259



ग़ज़ल

तुम यूं जा रहे हो रुठकर जाने में क्या फायदा
मुस्करा के जाओ मुस्करा के जाने में फायदा

दौलत पर नशा न कर दौलत रह जायगी यहीं
साथ जो दिया अब तलक निभाते रहे सब वायदा
मुस्करा के जाओ....

अब तक तो तुम गये ना जिंदगी में ऐसे कभी
कभी-कभी ये बस सोचने में ही फायदा
मुस्करा के जाओ....

रूठकर न जाओ यूं जीवन के इस मोड़ पर
देंगे हिसाब कर तुम्हारा सभी बाइज्जत बाकायदा
मुस्करा के जाओ....

आ जाओ अपनी गली देखो जरा चेहरों की चाहत
चमन की इस गाती गली का अनमोल कायदा
मुस्करा के जाओ....

ये जो बालों की सफेदी तन मन को भेदी
अब उम्र भी हो चली 'अंचल' उम्र से ज्यादा
मुस्करा के जाओ....

आर.सी.माहौर
वरिष्ठ सामग्री प्रबंधक
मुख्यालय, जबलपुर
मो.: 8989769825



व्यंग्य

कल से डाइटिंग पर हूँ



मैं डाईनिंग रूम में एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। अब बैठना शब्द का प्रयोग थोड़ा ठीक नहीं लग रहा। क्योंकि जो अवस्था थी, वो बैठने और लेटने के मध्य की थी। शरीर के निचले और ऊपरी भाग की कक्षा के मध्य एक असाधारण गोलाकार पिण्ड के स्थापित होने के कारण बैठना अब संभव नहीं रह गया था। यदि मैं शरीर को बलात् तरीके से बिठाने का प्रयास करता तो कुछ पलों के लिए बैठने जैसी अवस्था निर्मित हो जाती। लेकिन बैठते ही गोलाकार पिण्ड रूपी पेट, जांघों की कक्षा पर स्थापित हो जाता। वो ठीक नहीं था। इसलिए मैंने शरीर को फैलने की स्वतंत्रता दी। बैठते समय पेट, एक ठोस पदार्थ की तरह उछला और द्रव्य की तरह फैल गया। एक पल के लिए तो मुझे लगा कहीं यह फैलता हुआ बिखर न जाए।

पर एक निश्चित आयतन पर जाकर वो रूक गया। रूकते ही फेफड़ों में पिण्डीय दबाव के कारण जो कार्बन डाई आक्साइड फंसी हुई थी। वो तेजी से बाहर निकल गई और शरीर, जिसने बेडरूम से डाईनिंग तक की एक लंबी यात्रा तय की थी, वो हाँफने से निजात पा गया। डाईनिंग रूम एक दार्शनिक आयाम वाली जगह थी। सामने टीवी लगा हुआ था। एक ओर रसोई थी। कमरे की कक्षा में स्थापित डाईनिंग टेबल पर फलों और सलादीय सब्जियों की टोकरी रखी हुई थी। फलों पर निगाह पड़ते ही मैंने निगाह हटा ली। सजे हुए फल उदास भाव से मुझे देख रहे थे। सलादीय टोकरी में पड़े टमाटर, खीरा, प्याज आदि मेरे प्रेम को न पाकर पीले पड़ गए थे। मैं भी क्या करता, क्या मैं उनसे प्यार नहीं करता? वे सदैव मेरी स्मृति में रहते थे। हमेशा उनके बारे में सोचता रहता था। कितने विटामिन और प्रोटीन से भरे हुए थे वो। वे अबोध इस बारे में कहाँ जानते कि उनकी कम कैलोरीमय प्रेम से मैं वसामय पापी कैसे वंचित रहता हूँ।

वहीं दीवार में बनी आलमारी में डिब्बों में रखे चने, सोयाबीन, अलसी एवं बोतलों में बंद एलोविरा, आंवला, बहुत दिनों से खुली हवा को तरस रहे थे। वे भी मेरे हेल्थमय प्यार की कसौटी थी। मेरा प्यार सच्चा था, तभी तो इन सबको अपनी आँखों के सामने रखता था। ठीक है अभी मिलन की घड़ी नहीं आई। पर एक दिन हम वसा की दीवारें तोड़कर जरूर मिलेंगे। हमारी नजरें मिली। बंद डिब्बे में चना अपने कार्बोहाईड्रेडीय गुण पर शर्मिंदा था। पर मैंने ही उसकी प्रोटीनमय क्वालिटी बतलाकर उसे हीनता से उबारा था। सोयाबीन विरह में व्याकुल थी। अज्ञानी अलसी के पास तो इतने ओमेगायुक्त प्रणयगीत थे। कि उसे हमारे मिलन न होने का कारण समझ में नहीं आ रहा था। बंद डिब्बे में विराजमान अलसी की आँखों में रो-रोकर फंफूद पड़ गई थी। एलोविरा, आंवले की बोतलें एक्सपायरी की ओर बढ़ने के कारण भयभीत थी। हाय इस जन्म में न हो पाएगा मिलन।

डाईनिंग में ही रसोई से लगी हुई दीवार के सहारे रखी, एक्सरसाईज साईकिल कपड़ों के बोझ में कहीं गुम हो गई थी। चूंकि घर के गुगलीय लोकेशन में साईकिल वहाँ प्राथमिक तौर पर देखी गई थी, इसलिए कपड़ों के हवा में लटकने से विज्ञान के गुरूत्वाकर्षण सिद्धान्त के अनुसार यह अनुमान लगाया गया था कि कपड़ों को पृथ्वी पर गिरने से जो वस्तु बचा रही थी, वो साईकिल ही थी। साईकिल प्रतीक्षारत है। इंतजार करते-करते उसका हाल करण-अर्जुन की राखी जैसा हो गया है, जो कहती है, मेरे करण-अर्जुन आऐंगे। जमीन की छाती फाड़कर आऐंगे, आसमान का सीना चीरकर आऐंगे। पर करण-अर्जुन साईकिल पर पर्स, कपड़े, मॉस्क टांग जाते हैं, पास नहीं आते। लेकिन मैं ऐसा नहीं हूँ। घर पर रखी साईकिल को लेकर बहुत इमोशनल हूँ। वो पागल तो नाहक ही दुखी होती रहती है। नजदीक नहीं जा पाता तो क्या, प्यार तो कितना करता हूँ, कितना जानता हूँ उसके बारे में, कितनी देर चलने से कितनी कैलोरी बर्न होती है। कार्डियो के फायदे, मसल्स के फायदे, घुटनों के दर्द से निजात। सारी दुनिया को अमर प्रेम के बारे में नसीहत देता रहता हूँ। वो तो अच्छा है कि वो लदे हुए कपड़ों के घूंघट में सिमटी रहती है। नहीं तो सारे जग को हमारे प्यार के बारे में पता चल जाए।

कमरे की एक खूंटी पर जागिंग रस्सी इसी उम्मीद से लटकी हुई है, कि उसके गंभीर प्रयास से एक दिन मेरे शरीर पर लटकी हुई पेटीय सरंचना उछल-उछलकर दम तोड़ देगी। पर मेरी ओर से प्रोत्साहन न पाकर वो परमार्थ में लग गई। उसने वहाँ कुछ मकड़ियों को बहुमंजिली इमारत बनाने की छूट दे दी थी। अब वहां उनकी एक

समृद्ध कोलोनी विकसित हो गई है। पर इतने पॉजीटिव माहौल में, एक चीज हमेशा कांटे की तरह चुभती रहती है, वो है वेट मशीन, जब भी उस पर चड़ता हूँ, कांटा आगे की ओर भागता है। मैं लाख चाहता हूँ कि काँटा नीचे की तरफ आए। पर नहीं आ पाता। मशीन बहुत निष्ठुर है, मेरे प्यार को कहाँ समझ पाती है। सचमुच बहुत ही डरा देती है। मेरी हृदयगति बढ़ जाती है। हाँफ जाता हूँ, लगता है, माउंट एवरेस्ट चढ़ लिए। अब कितना-सा भोजन करता हूँ , शरीर की मात्रा से कितना कम। पर बेवफा झट से किलो के पैमाने आगे बड़ा देती है। खाना अंजुरि भर और वजन मन भर। अब प्रयास में क्या कमी है। पेट सहित वॉक पर भी जाता हूँ। पूरे चालीस मिनट। पेट ऐर्नजेटिक है, प्रोग्रेसिव है, हमेशा मुझसे आगे चलता रहता है। पार्क योद्धाओं से भरा रहता है। सभी एक ही लक्ष्य की प्राप्ति में लगे हैं। पर विचारपूर्ण गर्भावस्था जैसा पेट, वसाई वात्सल्य से ओतप्रोत।

जल्द ही स्वर्गीय शर्माजी वाली बैंच पर बैठ जाता। चालीस मिनट में से पच्चीस मिनट स्वर्गीय शर्माजी के घर वालों द्वारा उनकी याद में लगाई गई बैंच पर बैठा रहता। शर्माजी उनके घर वालों को याद आए न आए, मुझे बहुत याद आते हैं। अब प्यार की तो पूछे ही मत। निस्वार्थ प्यार का अदभुत उदाहरण है कि घूमने के लिए खरीदे गए चार हजार के जूते अब तक पहन नहीं पाया। प्रातःकाल में पहनने का प्रयास भी किया। झुकते ही राजकुमारीय पेट ने बाधाओं के कारण इंकार कर दिया। इतने सुंदर जूते, इन्हें जमीन पर न रखो, मैले हो जाऐंगे। अब मीनाकुमारी सा मन, पुरानी चप्पलों को घसीटता पार्क की ओर चल देता।

अब बात खाने की कहूँ। तो खाने में कभी नाज-नखरे तो जाने ही नहीं। जो पत्नी ने थाली में रखा, वो खा लिया। अब पत्नी है। सभी कहते हैं, कि स्वभाव से बहुत ही मीठी हैं। अब स्वभाव मीठा खाए बिना कैसे मीठा होगा, मजबूरी है। शुगरमय है, पर स्वभाव की रक्षा के लिये ज्यादातर मीठा ही बना डालती है। तभी पत्नी ने किचन से आवाज दी। कैसी लंबी उम्र है, उसे ही याद कर रहा हूँ। 'बाहर वर्षा हो रही है। पकौड़ी बना दूँ। 'मेरी आँखों के सामने कैलोरी चार्ट घूम गए। प्रत्येक सर्विंग पकौड़ी में तीन सौ कैलोरी। थोड़ी ज्यादा तो है। पर ऐसा नहीं कि उसमें वसा ही वसा है। प्रोटीन भी होता है। और फिर मैनें पत्नी को कड़े निर्देश भी दे रखे हैं। वेजीटेब्लस सभी डालो। धनिया, मिर्ची, प्याज। हेल्थी फूड बनाओ। इधर प्रत्येक सर्विंग तीन सौ कैलोरी की गणित। उधर रिमझिम के गीत सावन गाए। रोमांटिक मौसम, ऐसे में निष्कपट मन सर्विंग की गिनती कहाँ ध्यान रख पाता। वसायुक्त पेट, अपने समगुणीय वसाप्रेम में खो जाता। पर इस अद्भुत प्रेम मिलन में, मैं पागल नहीं होता। मुझे ज्ञानीय तत्व स्मरण रहता है। धनिया और मिर्ची के मेटाबोलिज्मीय गुण के कारण मैं चटनी बनाने का कड़ा अध्यादेश निकाल देता हूँ। मैं अनगिनत सर्विंग के रथ पर सवार था। अद्भुत दृश्य था। सामने करण -अर्जुनीय साईकिल माँ, वात्सल्यपूर्ण निगाहों से मुझे निहार रही थी। कब आओगे मेरे करन। अलसी, चने, सोयाबीन के स्वस्थ और जन्मकालीय फिगर मेंटेन रखने वाले डिब्बे मुझे निहार रहे थे। जागिंग रस्सी मकड़ियों को गोद में खिलाते हुए अपलक देख रही थी।



पत्नी ने पराठों के साथ मक्खन का प्रस्ताव रखा। मन के ज्ञान पक्ष ने तत्काल प्रभाव से प्रति चम्मच की दर से सौ कैलोरी की गणना कर मस्तिष्क को भेजी। पर मस्तिष्क ने एक नया प्रस्ताव समक्ष रखा कि कल से पक्की डाईटिंग, सिर्फ आज और केवल आज तला-भुना। इसलिए एक नया प्रस्ताव दो आइसक्रीम का। दो क्यों? क्योंकि कल से कुछ नहीं खाना है। कल से कड़ा शेड्यूल। आज-आज खा लें। हाथों-हाथ बेटी को आईसक्रीम आर्डर करने के लिए कह भी दिया। कोई रिस्क नहीं लेना चाहता। बरसात में पार्लर बंद भी हो जाते हैं।

बेटी हमेशा की तरह हंसी और आर्डर कर दिया। मैं भी मुस्कराया। पागल है, नहीं जानती। कल के लिए मैं कितना सीरियस हूँ। कल से पक्का, बिल्कुल टाइट शेड्यूल। दो आइसक्रीम खाकर अब मुझे बिस्तर दिखा। पेट वजन नहीं संभाल पा रहा था। आहिस्ता से बिस्तर पर गया। लेटा, करवट ली। पेटीय पिंड को संभालकर बगल में लिटाया। बिचारा झट से बिस्तर पर पसर गया। कितना सुकून से था। पर कोई बात नहीं, आराम कर लेने दो। कल से तो कड़ा शेड्यूल। बिल्कुल पक्का। हमेशा की तरह, कल से।

✍ **शरद उपाध्याय**
सेवानिवृत्त, कार्यालय अधीक्षक
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
प.म.रे., कोटा, मो. : 941426981



तनाव प्रबंधन

तनाव आज हमारी जीवन शैली का अभिन्न अंग बन गया है और हर कोई अलग–अलग तरीके के तनाव का सामना कर रहा है। तनाव कहीं और नहीं, बस आपके दिमाग में होता है। तनाव सचमुच आपके मन के अंदर आने वाले विचारों की ही देन है कि हम तनाव में चले जाते हैं, या उससे बाहर निकल पाते हैं। तनाव –ग्रस्त व्यक्ति हमेशा विचार मग्न रहता है। इस दौरान ज्यादातर उसके मन में बुरे विचार आते रहते हैं और बार–बार उसकी पुनरावृति मन/दिमाग में करता रहता है। जिससे वह किसी से ठीक से बात नहीं करता एवं बात–बात पर चिड़–चिड़ेपन का प्रर्दशन करता है। कई बार वह इस बात को अपने दिमाग से हटा नहीं पाता और स्वयं को असहाय महसूस करता है एवं अपने को या किसी अन्य को क्षति पहुंचा सकता है क्योंकि मन/दिमाग में तनाव जो भरा है।

सामान्य अवस्था वाला मनुष्य भी कभी–कभी किसी भी समय तनाव में पहुंच सकता है क्योंकि यह उसके आस–पास होने वाली घटनाओं पर निर्भर करता है। इसी वजह से कुछ लोग आजकल कम उम्र में ही हाई ब्लड प्रेशर के शिकार भी हो रहे हैं। यह बात अब सभी लोग सामान्य रूप से स्वीकार भी करने लगे हैं। गुरूनानक साहब ने कहा है कि–

नानक दुखिया सब संसारा,
सुखिया केवल नाम अधारा।

उनके अनुसार सारा संसार दुखी है क्योंकि वह माया, मोह, राग, द्वेष, छल–कपट, काम क्रोध, घृणा–तिरस्कार आदि विचारों से ग्रसित है। साथ ही उन्होनें सुखी रहने का उपाय भी बताया है सुखी तो वही है जो नाम के साथ है या सत्य से जुड़ा है। यह बातें एक बार में आसानी से समझ में शायद नहीं आये परन्तु विचार करें अपने द्वारा किये जा रहे क्रिया कलापों पर ध्यान देकर हम इस बात से धीरे धीरे छुटकारा पा सकते हैं। हमें यह समझ लेना चाहिए कि हमारे मन में चलने वाले विचार ही हमें प्रभावित कर रहे हैं। प्रतिक्षण मन में आने वाले विचार जितने शुद्ध अच्छे होंगे उतना ही अपका मन निर्मल होगा और यही निर्मल मन आपको तनाव मुक्त भी रखेगा।

तनाव एक ऐसी बीमारी है जो अमीर–गरीब, साक्षर–निरक्षर, छोटा–बड़ा, काला–गोरा, मजदूर–किसान, नौकरी–पेशा, बेरोजगारी कुछ नहीं देखता सबको होता है। अत: इसके उत्पन्न होने की पहचान करना और इससे मुक्त रहने का उपाय समझना जरूरी है। कोई व्यक्ति जब निराश होता है तो वह कई तरह के विकारों को



अपने अन्दर आने का न्यौता देता है, जिससे वह तनाव–ग्रस्त हो जाता है। जब ये विकार हमारे अंदर जाते हैं तो हम विचलित होकर उन्हीं के अनुकूल प्रतिक्रिया करते हैं और परिणाम स्वरूप हम अधिक विचलित और परेशान हो जाते हैं। अत: तनाव मुक्त होने का सबसे सीधा और सरल उपाय एक ही है 'स्वयं के मन को बुरे विचारों से मुक्त रखें'। अत: अपने को कार्य में हमेशा व्यस्त रखें जिससे कि कोई बुरा विचार मन में आने ही न पाये। फिर आनापान ध्यान क्रिया करें जिससे अपने अंदर विकारों का संक्रमण/संवर्धन न हो सके।

आनापान क्या है– ''सुखासन में आँखें बंद करके बैठे और अपनी आने–जाने वाली प्रत्येक स्वांस को महसूस करें, यही आनापान क्रिया कहलाती है। हमें सिर्फ और सिर्फ स्वांस को ही देखते रहना है शुरूआत में 15 मिनट करें और धीरे–धीरे समय बढ़ायें। अगर 1 घंटा रोज सुबह कर सकते हैं तो इसके परिणाम आपको बहुत अच्छे मिल सकते हैं। आपका तनाव छू मंतर हो जायेगा। रामचरित मानस में कहा गया है कि–

परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।

तुलसी दास जी के द्वारा कितनी सुन्दर बात कही गई है कि दूसरों का हित करना या भला करने जैसा कोई धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा पहुँचाने जैसा कोई बुरा कर्म नहीं है। हमें यह कोशिश करना

चाहिए कि हमारे कर्तव्यों से किसी को कष्ट या पीड़ा न हो अन्यथा हम जिसे कष्ट देते हैं, उसे और स्वयं को यह कष्ट होता ही है, जिससे कष्ट देने वाले का मन अशांत हो जाता है और वह स्वयं तनाव में रहता है। इसी प्रकार अगर हम किसी का भला करते हैं तो यह कार्य करके हमारे मन को अच्छा लगता है और तनाव मुक्त रहते हैं।



सारांश यह है कि अगर हम स्वयं किसी को कष्ट देते हैं तभी हम प्रतिक्रिया के रूप में स्वयं को तनाव ग्रस्त पाते है। अत: इसे रोकने का प्रयास करें तो शायद हम कुछ दिनों में ही अपने खाते में खुशियों का संचय करने लगेंगे। ऐसा लगातार करने से आप देखेंगे कि कुछ दिनों में आपका मन बहुत शांत और निश्चिंत रहने लगेगा और उसमें सकारात्मक विचार आने लगेंगे । अत: यह जरूरी है कि प्रतिदिन अपने द्वारा किये गए क्रियाकलापों की समीक्षा करते रहें। महान संत कबीर ने कहा है –

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा ना मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपनो, मुझे से बुरा ना कोय।

बात स्पष्ट है कि अपने अंदर की बुराई को हमसे बेहतर कोई नहीं जान सकता। अत: शांत चीत में बैठकर विचार करे और ऐसा कोई भी कार्य न करें जिससे हमको अपराध बोध हो। फिर आपका मन निर्मल होता चला जाएगा और यह निर्मल मन आपको वह सब कुछ देगा जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। तनाव हमारे द्वारा किये गए कर्मों का उत्पादन है जो हमारे शरीर पर झलकता है। हमेशा अच्छे कर्मों में मन को लगाए, आपको तनाव भी नहीं होगा और आपके चेहरे पर खुशी झलकेगी। आचार्य श्री एस.एन गोयनका जी ने कहा है –

जितना भला ना कर सके, माँ बापू सब कोय।
अधिक भला निज मन करें, जब मन निर्मल होय।

बात स्पष्ट है कि मन को निर्मल रखना ही स्वयं का भला करना है या स्वयं को प्रसन्न रखना है। मन को निर्मल करने का तरीका विपश्यना में बहुत अच्छा बताया गया है। सभी को कम से कम एक बार विपश्यना (अर्थात् जो वस्तु सचमुच जैसी हो, उसे उसी रूप में जान लेना) करना सीखना ही चाहिए। लगभग 25 सौ वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध द्वारा खोजी गई यह विद्या मानव मात्र के लिए आज भी उपलब्ध है, तो क्यों न इसका लाभ उठाया जाए।

तनाव प्रबंधन कैसे करें :-

तनाव प्रबंधन एक कला है। प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह तनाव मुक्त रहे, उन्मुक्त गगन में आजाद पंक्षी की तरह उड़ता रहे अर्थात् वह स्वस्थ रहे, निरोगी रहे और तनाव मुक्त रहे परंतु क्या केवल चाहने मात्र से तनाव मुक्त रहा जा सकता है। निश्चित ही इसके लिए हमें एक योजनाबद्ध तनाव प्रबंधन करना होगा। कार्य के घंटे, व्यायाम, योग, मनोरंजन, खेलकूद एवं परिवार के साथ समय बिताना आदि योजनाबद्ध प्रबंधन करना होगा तभी हम तनाव मुक्त रह सकते हैं।

तनाव प्रबंधन के उपाय :-

- वर्तमान में जीना सीखें अर्थात् भविष्य की व्यर्थ चिंता न करें।
- अपने विचार सकारात्मक रखें, हमेशा प्रमन्नचित और हंसमुख रहें।
- अपने मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिवारजनों से बातचीत करें।
- कम से कम 6 से 8 घंटे की नींद जरूर लें। अच्छी नींद तनाव को कम करने का कारगर इलाज है।
- प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट योग, ध्यान या व्यायाम करें।
- ताजा और पौष्टिक आहार ग्रहण करें।
- अपने काम से प्यार करें ।
- अपने शौक को हमेशा जिंदा रखें, जैसे- पेंटिंग, संगीत, खेलकूद, पुस्तक पढ़ना, फिल्म देखना एवं घूमना-फिरना आदि।
- किसी के प्रति राग-द्वेष, दुर्भावना अर्थात शत्रुता का भाव न रखें, सभी से अनुराग, प्रेम और करुणा का व्यवहार करें।

इस प्रकार आप एक बेहतर तनाव प्रबंधन से अपने आप को तनाव मुक्त रख सकते हैं।

✍ **टी.आर. बामने**
सीनियर सेक्शन इंजीनियर,
सडिपुका, भोपाल
मो.: 9752416119



132 वीं जयंती पर विशेष

अस्पृश्यता और डॉ. अंबेडकर



डॉ. बी.आर. अंबेडकर – एक अति विद्वतापूर्ण शख्सियत, एक युग पुरूष, एक संपूर्ण महामानव थे। इनकी ख्याति, इनकी कीर्ति भारत ही नहीं बल्कि विश्व के तमाम देशों में फैली हुई है।

यह सर्व विदित है कि अत्यधिक विद्वान होने के बावजूद डॉ. आंबेडकर को अपने जीवन में अनेकों बार अस्पृश्यता से रूबरू होकर अपमानित होना पड़ा। लेकिन बहुत ही कम लोग यह जानते होंगे कि वे हमारे देश की तत्कालीन प्रचलित सामाजिक संरचना के कब-कब व किस प्रकार कदम-कदम पर भुक्तभोगी बने। इस आलेख के माध्यम से मैं यह बताना चाहता हूँ कि कैसे और कब-कब उन पर अस्पृश्यता नामक सामाजिक बुराई का कहर टूटा था।

सबसे पहले बचपन की बात करते हैं। जब बालक भीम 4 साल के थे तो वे नाई के पास बाल कटवाने गये। नाई ने यह कहकर बाल काटने से मना कर दिया कि तुम अछूत हो और मैं अछूतों के बाल नहीं काटता हूँ। वह रोते-रोते घर को आये और उन्होंने अपनी बुआ मीरा बाई को यह बात बताई। बुआ मीरा बाई ने उन्हें समझाते हुए कहा कि कोई बात नहीं अब से मैं ही तेरे बाल काटा करूंगी। बालक भीम का अस्पृश्यता से संबंधित यह पहला अनुभव था।

इसके बाद स्कूल में उन्हें प्रताड़ित किया गया। स्कूल में सब बच्चे शासन द्वारा प्रदत्त टाटपट्टी पर बैठते थे परंतु बालक भीम अपने भाई आनंदराव अंबेडकर के साथ अपने घर से साथ लाये जूट के बोरे के टुकड़े पर अलग बैठते थे। उन्हें सार्वजनिक हैंडपंप/कुएं से पानी पीने का भी अधिकार नहीं था। पढ़ने में निपुण बालक भीम को एक बार गणित के शिक्षक ने ब्लैक बोर्ड पर गणित का एक सवाल हल करने के लिये कहा तो अन्य बच्चे यह कहकर चिल्ला उठे कि ब्लैक बोर्ड के पास हमारे टिफिन रखे हुये है और भीम के छूने से हमारा खाना अपवित्र हो जायेगा।

एक अन्य प्रसंग में वे अपने बड़े भाई आनंदराव के साथ शाम के समय अपने पिताजी से मिलने कोरेगांव जा रहे थे। वहां जाने हेतु बैलगाड़ी के अलावा और कोई अन्य साधन नहीं था। अमूमन ऐसा होता था कि यात्रा से पूर्व ही यात्रियों की जाति के बारे में पूछ लिया जाता था लेकिन अच्छे कपड़े पहने होने के कारण गाड़ीवान ने बिना जाति पूछे उन्हें गाड़ी में बैठा लिया। कुछ दूर चलने पर बातचीत के दौरान जब गाड़ीवान को पता चला कि ये दोनों बच्चे अछूत हैं तो उसने यह कहकर गाड़ी से उतार दिया कि तुमने मुझे, मेरी बैलगाड़ी और मेरे बैलों को अपवित्र कर दिया। बड़ी मुश्किल से दुगुना किराया देने पर गाड़ीवान इस शर्त के साथ तैयार हुआ कि वह उनके साथ गाड़ी में नहीं बैठेगा और इनकी बैलगाड़ी से दूरी बनाकर पैदल चलेगा।

उन्हें संस्कृत पढ़ने की बड़ी इच्छा थी परंतु एलफिंस्टन कॉलेज मुंबई में उन्हें संस्कृत विषय इसीलिये नहीं पढ़ने दिया गया क्योंकि वे अछूत थे। मजबूरन उन्हें अतिरिक्त विषय के रूप में फारसी को चुनना पड़ा। उपरोक्त सभी प्रकार की परिस्थितियों में वे फूट-फूटकर रोया करते थे।

बड़ा होने पर विदेश में पढ़ने हेतु उन्हें बड़ौदा के राजा सयाजी राव गायकवाड़ द्वारा दी गई छात्रवृत्ति के एवज में अनुबंध के मुताबिक बड़ौदा रियासत को दस साल की सेवायें देनी थी। इसके लिये जब वे बड़ौदा गये तो वहां पर उनके साथ निकृष्ट दर्जे का व्यवहार किया गया। डॉ. अंबेडकर ने अब तक अमेरिका की कोलंबिया यूनिवर्सिटी से एम.ए. और पी.एच.डी. की डिग्रियां हासिल कर ली थी। इसके बावजूद भी बड़ौदा के राजा के कार्यालय में अंबेडकर जी के पहुंचने पर चपरासी ने

नीचे बिछाया हुआ कालीन समेट लिया। उनका बैठने का स्थान भी एक कोने में निर्धारित किया गया था। पीने के पानी का घड़ा अलग से रखा गया था। वहां के चपरासी तक इनकी टेबल पर फाइले दूर से फेंककर दिया करते थे। सबसे अधिक समस्या उनके निवास स्थान की हुई। पूरे बड़ौदा में उन्हें ठहरने के लिये कोई स्थान नहीं दिया गया। किसी होटल में भी उन्हें कोई कमरा नहीं दिया गया। बड़ी मुश्किल से एक पारसी होटल में एक कमरा मिला जब उन्हें अपनी पहचान छुपानी पड़ी लेकिन दो दिनों में ही पता चल गया कि वह पारसी नहीं बल्कि एक हिंदू है और वह भी अछूत हिंदू जिसे कोई छूता भी नहीं है। बस क्या था, अंबेडकर जी का सारा सामान फेंक दिया गया। डॉ. अंबेडकर ने वह रात एक उद्यान में जागकर बिताई। आप अंदाजा लगा सकते है कि बड़ौदा के महाराजा सयाजी राव गायकवाड़ द्वारा चाहते हुए भी डॉ. अंबेडकर जैसे विद्वान पुरूष की कोई मदद नहीं की गई तो उनकी जाति के अन्य लोगों की स्थिति किस प्रकार की रही होगी।

इस प्रकार 11 दिनों में ही मजबूरन उन्हें बड़ौदा से वापस मुंबई लौटना पड़ा। उन्होंने अपने शिक्षक श्री कृष्णाजी केलुस्कर को यह बात बताई। श्री कृष्णाजी केलुस्कर ने बड़ौदा में रहने वाले अपने मित्र प्रोफेसर जोशी से बात की। प्रोफेसर जोशी ने आधुनिक विचारों का हवाला देते हुए कहा कि मैं ऊँच-नीच, छूआछूत आदि में विश्वास नहीं करता हूँ। डॉ. अंबेडकर मेरे घर पर रह सकते हैं। तब श्री कृष्णाजी केलुस्कर ने डॉ. अंबेडकर से कहा कि बड़ौदा में आपके रहने का इंतजाम हो गया है। आप मेरे मित्र प्रोफेसर जोशी के घर पर रह सकते हैं। डॉ. अंबेडकर बहुत खुश हुये और जल्दी ही ट्रेन पकड़कर बड़ौदा पहुंच गये। बड़ौदा स्टेशन पर उतरकर उन्होंने प्रोफेसर जोशी को खूब ढूंढा परंतु वे उन्हें कहीं दिखाई नहीं दिये। हां, प्रोफेसर जोशी का नौकर उनका पत्र लेकर मिला, जिसमें लिखा था कि, 'मैं तो आधुनिक विचारों में विश्वास करता हूँ लेकिन मेरी पत्नी पुराने विचारों को मानने वाली है इसीलिये आप मेरे घर पर मत आइये।' डॉ. अंबेडकर ने वह चिट्ठी पढ़ी और स्टेशन से ही मुंबई के लिऐ वापसी की ट्रेन पकड़ ली।

अस्पृश्यता की बात चली है तो यह बताना भी प्रासंगिक होगा कि पेशवाओं के राज में पुणे (महाराष्ट्र) में अस्पृश्यता अपनी चरम सीमा पर थी। मनुष्यता को झकझोर देने वाली और शर्मशार करने वाली व्यवस्था में अछूतों को एक तो उस सड़क पर चलने का अधिकार ही नहीं था। जिस पर सवर्णों को चलना होता था। यदि अछूत उस रास्ते से गुजरते भी थे तो उन्हें दो चीजे अपने साथ रखनी होती थी। एक कमर में झाड़ू और दूसरी गले में हांडी। कमर में झाड़ू इसीलिये कि जब वे रास्ते से गुजरे तो अछूत के पदचिन्हों पर पैर पड़ने से वह अपवित्र न हो जाये। इसी प्रकार गले में हांडी का उद्देश्य यह था कि यदि अछूत को थूकना हो तो वह सड़क को गंदा न करे और गले में लटकी हांडी में ही थूके। इस तरह की रोंगटे खड़े कर देने वाली अमानवीयता और मनुष्यता को कलंकित कर देने वाली स्थिति से संसार के किसी अन्य देश का अन्य कोई समुदाय शायद नहीं गुजरा होगा जिस स्थिति में भारत के अछूत गुजरे है।

यह कैसी सोच और विडंबना है कि जिस तालाब का पानी कुत्ते, बिल्ली, गाय, भैंस समेत सभी प्रकार के जानवर तो पी सकते है, परंतु उस तालाब का पानी एक मानव (अछूत मानव) छू दे तो वह अपवित्र हो जाता है। 'हम भी मानव है और प्रकृति द्वारा प्रदत्त वस्तुओं का अन्य मनुष्यों की तरह उपभोग करना हमारा भी अधिकार है', ऐसी प्रगतिवादी विचारधारा के तहत डॉ. अंबेडकर द्वारा वर्ष 1927 में महाड़ के सार्वजनिक चवदार तालाब का जल पीने हेतु सत्याग्रह किया गया। उन्होंने और उनके अछूत भाईयों ने जब इस तालाब का पानी पीया तो सवर्णों द्वारा उन्हें लाठियों से बुरी तरह पीटा गया।

वर्ष 1930 में नासिक के कालाराम मंदिर में प्रवेश का सत्याग्रह डॉ. अंबेडकर द्वारा किया गया। यहाँ भी सवर्णों द्वारा उन्हें और उनके अनुयायियों को मंदिर में प्रवेश नहीं करने दिया गया। डॉ. अंबेडकर के अनुयायियों द्वारा लंबे समय तक धरना दिया गया परंतु इसका उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ। कालाराम मंदिर के दरवाजे पूरे एक वर्ष तक बंद रखे गये परंतु अछूतों को भगवान के दर्शन नहीं करने दिये गये। चमत्कारों के देश भारत में

उस समय कोई चमत्कार नहीं हुआ, नासिक के जिस मंदिर में प्रवेश हेतु अछूतों ने डंडे और लाठियां खाई, उस भगवान द्वारा भी ऐसा कोई चमत्कार नहीं किया गया जिससे कि उन्हें अपने आराध्य के दर्शन हो सके।

अत्यधिक विद्वान होते हुए भी उपरोक्त सभी प्रकार से अपने आपको प्रताड़ित और तिरस्कृत पाकर डॉ. अंबेडकर ने उद्वेलित होते हुए नासिक के पास येवला नामक स्थान पर 13 अक्टूबर 1935 को अपने अनुयायियों के बीच अपने ऐतिहासिक भाषण में निम्न गर्जना की- ''दुर्भाग्य से मैं एक हिंदू के रूप में पैदा हुआ, यह मेरे वश में नहीं था लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं एक हिन्दू के रूप में हरगिज नहीं मरूँगा।'' डॉ. अंबेडकर द्वारा कही गई यह बात इतिहास में भीम-प्रतिज्ञा के रूप में जानी जाती है। भारत के उच्च वर्ग के लोगों का अस्पृश्य एवं अछूतों के प्रति व्यवहार बदलता न देख उन्होंने अपनी इस प्रतिज्ञा को ठीक 21 वर्षों पश्चात 14 अक्टूबर 1956 में पूरी की। इसी दिन नागपुर की दीक्षाभूमि में अपने पांच लाख अनुयायियों के साथ उन्होंने बौद्ध धम्म को अपनाया। एक ऐसा सद् धम्म जो ऊंच-नीच, छल-कपट, आडंबर,छोटा-बड़ा, छुआछूत, जाति-व्यवस्था, वर्ण-व्यवस्था जैसी संकुचित धारणाओं से कोसों दूर तथा समता, समानता, बंधुत्व पर आधारित है। प्रतिज्ञा के अनुसार निर्वाण के समय अर्थात 6 दिसंबर 1956 को डॉ. अंबेडकर हिन्दू नहीं थे, वे बौद्ध हो गये थे। भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पी, ज्ञान के प्रतीक, भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर को उनके 132 वें जन्म दिवस के पावन अवसर पर शत्-शत् नमन्।

✍ **किशोर कुमार गजभिये**
मुख्य कर्मचारी व कल्याण निरीक्षक,
कार्मिक विभाग, मुख्यालय, जबलपुर
मो.: 9752415623



कविता

अब लाठी छड़ी सहारे हैं

मानव एक सामाजिक प्राणी, रिश्ते नाते सारे हैं।
जिन्हें निभाना है आवश्यक-सबके न्यारे-न्यारे हैं।।

अब तो रिश्ते छांट लिये, जो व्यक्ति स्वार्थ के मारे हैं।
किससे कितना लाभ मिलेगा, तोल-मोल कर डारे हैं।।

धर्म,नीति के बंधन तोड़े, मतलब भरे नजारे हैं।
सेवा परोपकार से हटकर, लालच के मतवारे हैं।।

स्वार्थ जहां से पूरा होता, जाते उसके द्वारे हैं।
अपना दाम जहां पर लगाता, रहते सदा किनारे हैं।।

भूल गये है फर्ज निभाना-मात-पिता बेचारे हैं।
जिनका आशीर्वाद कीमती, वे अब बिना सहारे हैं।।

सिमट रहा सामाजिक कुनवा-पत्नी बेटे प्यारे हैं।
भाई-बंधु सब कुटुम कबीला-कहने मात्र हमारे हैं।।

अपनी शान प्रतिष्ठा खातिर, बने हुये गुब्बारे हैं।।
भौतिक सुविधाओं के पीछे, खुद का ध्यान बिसारे हैं।।

बिन औषधि के सो नहीं पाते-बिस्तर डनलफ बारे हैं।
ओढ़ लिये चादर मलमल की- मन के नैन उंघारे हैं।।

बड़ी-बड़ी बातें करते हैं, हाथ में इनके तारे हैं।
नहीं पता किस पल क्या होवे, पांव तले अंधियारे हैं।।

जियो जियो भाई बहुत खूब है, कहने वाले सारे हैं।
उछल कूद कर अंत काल में, लकड़ी के सहारे हैं।।

रखा जोड़कर इतना सारा, बिन सोचे और विचारे हैं।
देख बुढ़ापा लगे सोचने, अब लाठी, छड़ी सहारे हैं।।

✍ **ललन प्रसाद विश्वकर्मा**
सेवानिवृत कार्या. अधीक्षक
पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर
मो.: 9407078968



भावनात्मक बुद्धिमत्ता

बुद्धि का विकास मानव अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए -डॉ. भीम राव अम्बेडकर



वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में इंसान की भौतिक प्रगति चहुँओर दृष्टिगोचर है और हम ये मानते है कि इस प्रगति का इंसान के मानसिक बुद्धिमत्ता से सीधा संबंध है। इंसान दिन-ब-दिन ज्यादा होशियार/बुद्धिमान हो रहा है और इसी कारण नित नये भौतिक प्रगति पथ पर अग्रसर है।

वर्षों से 'इंटेलीजेंसी' शब्द को हमने हमेशा मानसिक बुद्धिमत्ता से जोड़ा है जिसका मापदंड आई.क्यू. स्कोर टेस्ट पर निर्धारित किया जाता है। कहते है सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन का आई.क्यू. स्कोर 160 के आसपास था। आजकल माता-पिता बच्चों को कम उम्र में यह टेस्ट दिलवाते है ताकि उन्हें यह ज्ञात हो सके की उनका बच्चा कितना ''होशियार'' है। उसका उतना ''पैकेज'' होगा और इसीलिए वो अपनी जिन्दगी में ''सफल'' कहलाएगा। सफलता का पर्याय हमारे वर्तमान समाज में वित्तीय स्थिति पर आधारित हो गया है, अर्थात जो जितना होशियार उसका उतना ज्यादा ''पैकेज'' और इसीलिए 'सफल' पढ़ाई ज्ञान अर्जन का स्त्रोत के बजाय समाज में कामयाब होने का माध्यम बन गया है।

जाहिर सी बात है कि जब हम भौतिक प्रगति की और अग्रसर है और ''सफल'' है तो हमें हमेशा खुश होना चाहिए क्योंकि हम सुख सुविधायुक्त जीवन शैली बिताने में सक्षम है। पर खुश रहने के बजाय हर दूसरा व्यक्ति यह कहते पाया जाता है ''हम मशीनी जिंदगी जी रहे हैं ऐसी भावनाएं व संवेदनाएं कम होती जा रही है', 'बहुत टेंशन है' इत्यादि और आश्चर्य की बात ये है कि ये वाक्य समाज के हर आयु व वर्ग द्वारा इस्तेमाल किया जा रहा है। कुछ साल पहले तक तनाव अर्थात स्ट्रेस शब्द यदाकदा ही सुनने मिलता था परन्तु आज जैसे यह सबसे प्रचलित शब्द हो गया है, जिससे पूछो वो तनाव में है, फिर चाहे वो बच्चे हो या बड़े।

सवाल ये उठता है की जब हम ''सफल'' है तो हम खुश क्यों नहीं है? क्यों आए दिन हमें मेडिकल, इंजीनियरिंग, कोचिंग क्लासेस यहाँ तक की स्कूल के होशियार बच्चों के द्वारा उठाए गए आत्मघाती कदम के बारे में सुनते है? क्या कारण है कि माँ-बाप, बच्चों को गलती करने पर भी डाँटने से डरने लगे हैं, कि बच्चा कोई गलत कदम न उठा लें? क्यों न हम बच्चों को समझा पा रहे है, न तो हमें? क्यों निराशा व हार को स्वीकार कर आगे बढ़ने की चाह व हिम्मत आज कम होती जा रही है? क्यों ये एहसास होने लगा है कि अहं सर्वोपरी हो गया हैं और हर दूसरा व्यक्ति एक दावानल बन गया है। सहनशीलता, विनम्रता, परोपकार जैसे शब्द व भावनाएं सिर्फ किताबों तक सीमित होकर रह गयी हैं?

मानसिक तनाव के इस विकराल रूप को महसूस तो किया जाता रहा है पर क्या कोई जरिया है जिससे रक्तचाप की तरह इसे नापा जा सके और समय रहते इसे दूर किया जा सके ताकि ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस खूबसूरत जीवन को हंसी खुशी के साथ व्यतीत कर सके?

फिल्म थ्री इडियट्स में आमिर खान का संवाद याद है आपको... यह इंजीनियर बड़े चालाक होते हैं उन्होंने ऐसी कोई मशीन ही नहीं बनाई जो ब्रेन का प्रेशर नाप सके।

बदकिस्मती से यह सच है, मशीन द्वारा मानवीय संवेदनाओं को नापना शायद आज भी संभव नहीं हो पाया है पर इस पर निरंतर हो रहे शोध से जो एक शब्द उभर कर आया है वो है भावनात्मक बुद्धिमत्ता 'इमोशनल इंटेलिजेंसी' 1990 के दशक में गढ़ा गया था, जिसे मनोवैज्ञानिक और लेखक डैनियल गोलेमैन ने अपनी पुस्तक 'इमोशनल इंटेलिजेंस व्हाई इट कैन मैटर मोर दैन आईक्यू' में लोकप्रिय बनाया।

शोध में पाया गया कि मेंटल इंटेलिजेंस के साथ-साथ एक और अहम् इंटेलिजेंसी है जिसे भावनात्मक बुद्धिमत्ता कहते है यह हमारी भावनात्मक बुद्धि है जो यह बताती है कि हम भावनात्मक रूप से किसी भी परिस्थिति से निपटने के लिए कितने परिपक्व है आई.क्यू. टेस्ट की तरह इसका मापदंड ई.क्यू. टेस्ट होता हैं। हम जानते है कि हर व्यक्ति की एक सी घटना या परिस्थिति में प्रतिक्रिया अलग होती है। हमारी भावनात्मक बुद्धि यह निर्धारित करती है कि हम भावनात्मक रूप से किसी परिस्थिति से निपटने के लिए कितने परिपक्व हैं।

कोविड महामारी के पश्चात आई.क्यू. स्कोर की अपेक्षा

ई.क्यू. स्कोर जो व्यक्ति की भावनात्मक परिवक्वता का मापदंड है। आज अप्रत्याशित रूप से प्रचलन में हैं, इस महामारी के बाद से इंसान भावनात्मक संरक्षा एवं सुरक्षा के प्रति काफी सचेत हो गया है। इनके वैसे तो बहुत सारे घटक हैं, और प्रोफेशनल ही इनके बारे में पूरी बातें बता सकते है पर कुछ सरल घटक को बहुत ही संक्षिप्त तोर पर प्रस्तुत कर रही हूँ, जिन्हें जानकर शायद आप अपनी मानसिक परिपक्वता को समझ सकते है, क्योंकि यदि आप मानसिक रूप से परिपक्व हैं तो निश्चित तौर पर आप अन्य लोगों के बर्ताव के कारण और परेशानी को समझ उनसे बात कर एवं उचित समझने पर उन्हें मनोविज्ञानी या मनोचिकित्सक के पास जाने की सलाह दे सकते है , हो सकता है कि आपके इस परिपक्वता से किसी के घर का चिराग बुझने से बच जाये। ये घटक निम्नानुसार है-

आत्म जागरूकता- यदि आप आत्म-जागरूक हैं, तो आप अपने स्वयं के व्यवहार और उद्देश्यों के पैटर्न को देख व समझ सकते हैं। आप समझते हैं कि आपकी भावनाएँ और कार्य आपके आस-पास के लोगों को कैसे प्रभावित करते हैं, बेहतर या बद्तर। आप अपने ट्रिगर्स जिन कारणों से या घटना से आपके व्यहार में परिवर्तन होता है, को भी पहचान सकते हैं ।

आप अपनी ताकतों को पहचान सकते हैं और अपनी सीमाएं देख सकते हैं। अर्थात आप यह स्वीकार कर सकते है कि आप इंसान है और इसीलिए आप सिर्फ बेहतर करने की कोशिश कर सकते है आप फरफेक्ट नहीं हैं। आप अपनी गलतियों की जिम्मेदारी स्वीकार कर उनसे सीख ले सकते है, हार और जीत को संयमित रूप से स्वीकार कर सकेंगे और हर परिस्थिति में स्थिरचित्त व खुश रह सकते हैं।

आत्म नियमन- यदि आप आत्म-नियमन कर सकते हैं, तो आपकी भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ परिस्थितियों के अनुरूप होंगी। आप आवश्यकतानुसार रुकना और अपने आवेगों को नियंत्रित करना जान लेंगे। आप कार्य करने से पहले सोचेंगे एवं आपका ध्यान कार्य पर केन्द्रित होगा न की परिणाम पर। आप संघर्ष का प्रबंधन और अपने वातावरण में बदलावों के साथ तालमेल बहुत ही सरल तरीके से बिठा लेंगे।

प्रेरणा- यदि आप आंतरिक रूप से प्रेरित हैं, तो आपमें व्यक्तिगत विकास की प्यास है। पैसे, प्रसिद्धि, स्थिति या मान्यता जैसे बाहरी पुरस्कारों की अपेक्षा आप स्व निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित होते हैं। एक व्यक्ति के रूप में स्व-विकसित व सफल होना चाहते हैं। याद रखें कि हर व्यक्ति के लिए सफलता के मापदंड अलग है,कोई विश्व रिकॉर्ड बनाकर सफल कहलाता है तो कोई जो कभी चल ही न पाया हो, वो सिर्फ 10 सीढ़ी चढ़कर भी सफल कहलाता है ।

समानुभूति (सहानुभूति से अलग)- सहानुभूति में हम दूसरे के दुख को पहचानकर उसकी मदद करने की सोचते हैं। हमारा स्वयं उसके दुःख से दुखी होना जरूरी नहीं है। पर समानुभूति का मतलब है, ''दूसरा जैसा महसूस कर रहा है, वैसा ही महसूस करना''। इसके लिए स्वयं को दूसरे के स्थान पर रखकर सोचना होता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक बड़ा हिस्सा इस बारे में सोचने और समानुभूति रखने में सक्षम होना है कि दूसरे लोग जैसा महसूस कर रहे हैं, यदि आप उसी स्थिति में होते तो आप कैसी प्रतिक्रिया देते। जिन लोगों के पास मजबूत भावनात्मक बुद्धि होती है वे अन्य लोगों के दृष्टिकोण, अनुभवों और भावनाओं पर विचार करने में सक्षम होते हैं एवं किसी पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर लोगों के व्यवहार का आंकलन या समीक्षा नहीं करते ।

सामाजिक कौशल- यदि आपने अपना सामाजिक कौशल विकसित कर लिया है, तो आप टीम में काम करने में माहिर हैं। आप बातचीत या संघर्ष समाधान में दूसरों और उनकी जरूरतों से अवगत हैं। आप अपने सक्रिय रूप से देखने, सुनने, बोलने व शारीरिक भाषा से किसी भी व्यक्ति को भरोसा करने का अवसर दे पाते हैं और अवश्यकता पड़ने पर उसके नकारात्मक दृष्टिकोण को बदल सकते हैं। आज हमारे देश में लोग मानसिक विकास के प्रति काफी जागरूक है पर उसके साथ-साथ अगर हम भावनात्मक विकास के प्रति भी सचेत रहे। उसे विकसित करने का निरंतर प्रयास करते रहे, तो हम जिंदगी में हर परिस्थिति को स्थिर भाव से स्वीकार कर पाएँगे। मानसिक तनाव में नहीं बल्कि हर पल खुश रहेंगे। वक्त हमेशा एक-सा नहीं रहता, इस कथन पर यकीन करना सीखेंगे। कहते है न कि **मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।** तो कोशिश करें कि न स्वयं जीवन से हारे न किसी और को हारने दें।

✍ **अदिति बोचरे**
मुख्य वाणिज्य निरीक्षक (मुख्यालय)
पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर
मो.: 7024148283



व्यंग्य

बातों का उस्तरा...

बात, बात ही रहे तो बात क्या ? बात में बात हो, तो बात है। बोलना अभिव्यक्ति का सहज और सरल माध्यम है। कुदरत ने अभिव्यक्ति के माध्यम के तौर पर बाकी गुण बाद में दिए, लेकिन, बोलने का गुण पहले दिया। इसलिए कि बोलना निहायत जरुरी है। बोलना हमारी आवश्यकता का अंग है। जो बोलता नहीं, उसे गूँगे-बहरे के नाम से बोला जाने लगता है। इस संज्ञा के लिए अतिरिक्त कुछ भी प्रयास नहीं करना पड़ता। कालांतर में जैसे-जैसे हम सभ्य होते चले गए, बोलना अपने आप में एक कला बन गई। इसी कला के चलते कोई 'उद्घोषक' कहलाया तो कोई 'वक्ता'। कोई 'मृदुभाषी' तो कोई 'वाचाल'!

आज इस कला के माध्यम से कितने ही महानुभावों को 'पी-फोर' यानि कि पद, पैसा, प्रतिष्ठा और प्रभाव का सुख बराबर मिल रहा है। जो अपनी बात को कला से नहीं बोलते वो काल के जाल में उलझ जाते हैं। समा जाते हैं। तड़पते हैं। तरसते हैं। आदि-अनादि गमों से सराबोर हो जीते हैं। जो समझदारी का सहारा लेते हैं, वो आजीवन सहारे के सुख से ओत-प्रोत हो जीते हैं। पनपते हैं। पुष्पित-पल्लवित होते रहते हैं। इस मामले में अनुभवी द्वारा साफ-साफ कहा भी गया है- 'बातन हाथी पाइए, बातन हाथी पाँव'।

वर्तमान में हाथी पर बैठने का तरीका बदल गया है। कला के दम पर हाथी पर बैठना सबके वश की बात नहीं रही। क्योंकि ज्ञान दायिनी माँ 'सरस्वती' की कृपा सब पर तो बरसती नहीं! अतएव, ये बात चलन में आई कि जान-बूझ कर कुछ ऐसा बोला जाए कि 'काल' बन जाए, बाकी व्यवस्था पर छोड़ दिया जाए। पक्ष नहीं तो विपक्ष तो संभाल ही लेगा। क्योंकि वो तो है ही इसीलिए। अब जो ताक में बैठा हो वो फांका तो करेगा नहीं। आखिर, उसे भी अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए कुछ तो चाहिए। जिसके सहारे वो अपनी साख बचा सके और इस शेर को कुछ इस अंदाज में कह सके कि- ''बड़ी मुश्किल से ये साख बचा पाया हूँ, जिस साख पर बैठा हूँ, वो साख बचा पाया हूँ।''

साख बचाना और भविष्य में उसे और भी बेहतर तरीके से बचाए रखना दोनों ही अपने आप में इस कदर महत्वपूर्ण हैं कि इससे ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं। बस, इसी महत्वपूर्णता के चलते महात्वाकांक्षा के पटाखें दिलो-दिमाग में हमेशा धाँय-धूँ करते रहते हैं। इसी धाँय-धूँ के चलते एक से बढ़कर एक तरोताजा अभिनव प्रयास पुनीत व पावन विचारधारा के साथ अपनी उपस्थिति को कायम रखते हैं और आम जन में प्रवाहित किए जाते हैं।

'जिस राह फायदे होंगे, वहाँ टूटते कायदे होंगे...' वाली बात अधिकतर देखने-सुनने को मिलने लगी हैं। इस बढ़ती प्रवृत्ति के कारण आज हम कुछ भी बोलने के लिए स्वतंत्र हैं। जिसके मन में जो आ रहा है, बोले जा रहे हैं। बात अच्छी लगे तो ठीक, न लगे तो भी ठीक। यहाँ तो बोलने से मतलब है। लिहाजा, बोला जा रहा है। खुलकर बोला जा रहा है। मुस्करा कर बोला जा रहा है। चार-चार माइक लगे हुए हैं, फिर भी चिल्लाकर बोला जा रहा है। 'गला फाड़कर' बोला जा रहा है। 'डॉयस' पर हाथ मार-मार कर बोला जा रहा है। जहाँ देखों वहाँ बोला ही जा रहा है। अब किसके समझ में क्या आ रहा है। यह समझने वाले के ऊपर है। समझ गया तो ठीक वरना समझाने के लिए हिंदी भाषा में शब्दों की की कभी कमी नहीं रही और न ही रहेगी। क्योंकि हमारी हिंदी भाषा है ही ऐसी भाषा, जिसकी आज दुनिया मुरीद है। एक हम ही हैं जो अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों का हर साल उद्घाटन किए जा रहे हैं। वरना, तो बड़े-बड़े देशों में हिंदी का परचम पूरे जोश व खरोश के साथ आसमान को छूने के लिए बेताब है। ये अलग बात है कि हमारी बेताबी अंग्रेजी के प्रति कुछ ज्यादा ही बेताब नजर आती है।

मात्र बोलने के ही नहीं बल्कि बेहिसाब बोलने के प्रत्यक्ष प्रमाण देश-प्रदेश में आयोजित जन सभाओं, चुनावी सभाओं, राजनैतिक रैलियों आदि में बराबर देखने-सुनने को मिलते रहते हैं। अपने यहाँ लिखने का स्तर देखा जाता है, बोलने का नहीं। अगर बोलेने वाला नेता हो तो उसके लिए यह बात 'सोने पे सुहागा' हो जाती है। मगर, लिखने वाले के लिए यही बात उलट साबित होती है। आप साहित्य की कोई-सी भी विधा जैसे- कहानी, कविता, गीत, गज़ल, उपन्यास, व्यंग्य लेख आदि लिख कर तो देखिए। क्या मजाल कि कोई एक बार में छाप दे, प्रकाशित कर दे। आपके लेखन में रस, छंद, अलंकार, मात्रा, हलंत, वर्तनी, विम्ब, व्याकरण, सम्प्रेषण आदि हर बात का इतना ध्यान रखा जाएगा कि आपका ध्यान स्वत: ही लेखन कार्य से हट दूसरे कार्य में लग जाएगा। आपकी रचना

संपादक महोदय की नजरों से गुजरने के पश्चात खेद सहित टिप्पणी सहित बड़ी बेदर्दी के साथ आपके ही डाक टिकट लगे लिफाफे में कैद कर आपको वापस कर दी जाएगी। ये दौर तब तक चलता रहेगा जब कि लिखने वाले के गाल पोपले और बाल सुर्ख सफेद तथा आँखों पर मोटे लेंस का चश्मा न लग जाए। जब तक ऐसा नहीं हो जाता तब तक आप लेखन करने लायक सिद्धहस्त नहीं माने जाते क्योंकि बात स्तर की होती है और स्तर को कायम रखना सबके वश की बात नहीं। ये तो वो साधना हैं, जो जीवन परयंत चलती ही रहती है। परंतु, बोलने के मामले में बात का स्तर नहीं बल्कि बातों का कटाक्ष रुप यानि कि 'उस्तरा' देख जाता है। जिसकी बातों में जितना ही पैनापन, धारपन, कटाक्षपन होगा वो उतना ही सफल व कुशल वक्ता माना जाएगा।

जिसकी बात, जितनी ही घारदार होगी उसके पीछे मीडिया वाले उतनी ही तेजी से दौड़ेगें। पीछा करेंगे। फालो करेंगे। भुट्टे के माफिक माइक को बार-बार आपके मुँह के पास ले जाएंगे। आपका साक्षात्कार होगा। आपकी बात थोड़ी ही देर में गाँव, कस्बे, नगर से होती हुई प्रदेश और देश के कोने-कोने में सिर्फ फैलेगी नहीं बल्कि आधुनिक बोली में 'वायरल' हो जाएगी। आज के समय में 'वायरल' होना कोई मामूली बात नहीं। यह विख्यात व कुख्यात दोनों ही मामले में अपनी अहम भूमिका निभाने में माहिर व सहायक सिद्ध होती है।

वर्तमान काल में यह बात मोहल्ले की गली से लेकर सार्वजनिक क्षेत्र के गलियारे तक का हर छोटा-बड़ा नेता, अभिनेता, पुजारी, बाबा बखूबी समझता है। वह जानता है कि ऐसी बात बोलने में ही बेहतर वर्तमान व सुनहरे भविष्य की रस मलाई छुपी है। इसलिए बात और वजह छोटी भी हो तो उसे कहने का ढंग नुकीला और धारदार हो, तब तो कोई बात है। वरना, कोरी बकवास है। और... बकवास सुनने के लिए इस व्यस्ततम् जमाने में किसी को फुर्सत कहाँ?

सतीश चन्द्र श्रीवास्तव
वरि. तकनीशियन, स.डि.पु.का., भोपाल
मो. : 8085918811



यदि वह होती

आज यदि वह होती तो
सारी पीड़ा सारा दर्द
मैं देता धर उनके सामने
मेरी पीड़ा, मेरा दर्द
वे ही केवल समझ पाती
हाय! दुर्भाग्य मेरे
वे भी अब नहीं साथ मेरे
मेरी माँ मेरी करूणामयी माँ
कहां हो तुम?
इन विरह के जंगलों में
तुम्हें खोजा तुम नहीं मिली
आज यदि वे होती तो
सारा दर्द सारी पीड़ा मैं,
देता धर माँ तुम्हारे सामने
माँ तुम नारी के रूप में
मेरे लिए वात्सल्य का उपहार हो।



डॉ. अलकेश खत्री
केन्द्रीय चिकित्सालय
पश्चिम मध्य रेलवे,
जबलपुर

घर से निकल गए ....

पढ़ लिख गए तो हम भी घर से निकल गए
गाँव लौटन में फिर तो जमाने निकल गए
घिर आई रात हम भी चलें अपने घर की ओर
पंछी भी अपने-अपने घरोंदे को निकल गए
बारिश गुजरी सरसों के मुरझा गए फूल
उनसे मिलने के सारे रास्ते निकल गए
पढ़ लिख गए तो हम भी घर से निकल गए
गाँव लौटन में फिर तो जमाने निकल गए
पहले तो हम बुझाते रहे अपने घर की आग
फिर बस्तियों में आग बुझाने निकल गए
खुद मछलियाँ पुकार रही हैं कहां है जाल
शिकारी की आरजू में निशाने निकल गए
हमारी नजरों का आया उसे तब ख्याल
जब मोतियों के सारे खजाने निकल गए
पढ़ लिख गए तो हम भी घर से निकल गए
गाँव लौटन में फिर तो जमाने निकल गए



मजहर खान
कार्यालय अधीक्षक, संरक्षा/मुख्यालय/जबलपुर

हथेली पर नून

मैं मूलत: बिहार का रहने वाला हूँ। वर्तमान में कटनी मध्यप्रदेश में रहता हूँ । मैं एक अत्यंत मध्यम परिवार से रहा हूँ । बात उस समय की है जब मेरी उम्र 5 या 6 वर्ष की रही होगी। उस समय मेरे पिता जी माध्यमिक विद्यालय में एक शिक्षक थे । मेरी माँ शुरू से ही अत्यंत धार्मिक प्रवृत्ति की रही हैं । धर्म कर्म की शिक्षा हम लोगों को माँ के द्वारा घड़ी-घड़ी दी जाती रही है। बचपन में अक्सर रात को माँ के खाना बनाते समय मैं माँ के पास ही बैठ जाया करता था। माँ मुझे कई बार डांटा भी करती थीं पढ़ने के लिए। लेकिन मैं माँ के पास बैठने के बहाने ढूंढता रहता था । खाना बनाते समय जरूरत का छोटा-छोटा सामान उनके हाथ में दिया करता था । इससे उनकी कुछ मदद भी हो जाती थी और मुझे माँ के पास बैठने का मौका भी मिल जाता था। उनकी मदद करने से जो खुशी मिलती थी, उसका तो कोई मोल ही नहीं था । माँ रोटी बनाती रहती और मैं उनके पास ही बैठ कर उनके हाथों की गरम-गरम रोटियां खाता रहता ।

एक दिन सब्जी में नमक कुछ कम था। मैंने खाना खाते-खाते माँ से कहा 'माय, थोड़ा-सा नमक देना।' 'माँ, थोड़ा सा नमक देना' हम लोग माँ को बचपन से ही 'माय' ही बोला करते हैं। माँ चुटकी से नमक लेकर थाली में डालने लगी तो मैंने अपनी हथेली आगे कर दी। माँ ने झट से अपना हाथ खींच लिया और डांटने के अंदाज में बोली 'हाथ पीछे कर, हथेली पर नून न देवे के।' 'हाथ पीछे करो, हथेली पर नमक नहीं दिया जाता' क्यों, हथेली पर नमक क्यों नहीं दिया जाता - 'हथेली पर नून देवे से हमर सब धरम तोरा के मिल जाई ।' 'हथेली पर नमक देने से मेरा सारा धर्म तुमको मिल जायेगा।' 'अच्छा ! तब तो यह बहुत ही अच्छा है । आप धर्म भी तो हमारे लिए ही करती हैं न।' मैं खुश होते हुए बोला। 'न , हम, धरम परलोक में जब कोई साथ न रहे तब साथ देत । अपन कैल पुण्य त अगलो जनम मे साथ देई । 'नहीं , मेरा धर्म परलोक मे मेरा साथ देगा जब कोई साथ नहीं रहेगा। अपना किया हुआ पुण्य तो अगले जन्म में भी साथ देता है।' अब तो रोज की आदत सी हो गई। मैं रोज माँ से नमक मांगता और जब माँ नमक देने लगती मैं अपनी हथेली आगे कर देता । फिर माँ का प्रवचन शुरू हो जाता । मुझे माँ से प्रवचन सुनना बहुत अच्छा लगता था इसलिए जानबूझ कर रोज नमक मांगता और हथेली आगे कर देता । माँ के धार्मिक प्रवृत्ति का अंश हम सभी भाइयों में कुछ न कुछ आ गया था । यहां बता दूँ कि हम चार भाई हैं। माँ हम लोगों को अक्सर धार्मिक कहानियां और पुनर्जन्म की बाते सुनाती रहती थीं।

एक बार किसी कारणवश माँ की तबीयत कुछ खराब हो गई । उनसे काम करने की हिम्मत नहीं हो रही थी। शायद बुखार आ गया था। माँ की तबीयत खराब होना मतलब था पूरे घर का अस्त- व्यस्त होना और हुआ भी यही। माँ ने किसी तरह खाना बनाकर रख दिया और बिस्तर पर लेट गई। उस छोटी-सी उम्र तक मैं यही सोचता था कि तबीयत सिर्फ हम लोगों की खराब होती है, माँ की तबीयत कैसे खराब हो सकती है । माँ की तबीयत खराब हो जायेगी तो फिर हम लोगों को कौन देखेगा । माँ की तबियत खराब होने का तो कभी सपने में भी नहीं सोचा था। पापा दवा ला दिए और खिलाकर स्कूल चले गए। पापा स्कूल के बाद उधर से ही ट्यूशन पढ़ा कर रात को देर से लौटते थे । शाम तक माँ का बुखार नहीं उतरा । माँ बिस्तर पर ही लेटी रहीं । रात में जब माँ खाना बनाने नहीं उठी तो मैं परेशान हो उठा। मैं बार-बार चूल्हे के पास जाता और लौट आता । माँ आँख मुंद कर लेटी हुयी थीं। मैं जाकर माँ के पास बैठ गया। माँ अपना हाथ मेरे सर पर रखकर सहलाने लगीं। माँ को जगा हुआ जानकर मैंने धीरे से पूछा-'माय, आपकी तबियत कैसे खराब हो गई। आप तो इतना पूजा-पाठ करती हैं।' 'होई पिछला जनम के कोई पाप' जे धरम में कोई कमी रह गेल होई। श्, होगा कोई पिछले जन्म का अपराध जिसके कारण धर्म में कोई कमी रह गई होगी।' माँ धीरे से अपने हाथ से मेरे सिर को सहलाती हुई बोलीं। हम मध्यमवर्गीय हिन्दू परिवार की यही खासियत है। किसी भी कष्ट को पूर्व जन्म की कोई गलती मानकर अगले जन्म के लिए अधिक पुण्य करने का प्रयास करते हैं। मैं दौड़ता हुआ रसोई घर की ओर भागा और मुठ्ठी बन्द किए हुए माँ के पास पहुँच गया ।'माय, माय, माँ -माँ करता हुआ माँ को हिलाने लगा। 'की बात' क्या बात है - माँ धीरे से आँख खोलती हुयी बोली । 'आप अपना हाथ खोलिए' मैंने माँ का हाथ अपनी तरफ खींचते हुये बोला। माँ ने अनमने ढंग से अपना हाथ मेरी तरफ बढ़ाते हुए अपनी हथेली खोल दी।

' ले माय! अब हमर सब धर्म तोरा मिल जतई। पिछला जनम के कोई पाप तो हसर धरम में कमी न हो, देत। लो माय! अब मेरा सारा धर्म आपको मिल जायेगा। अब पिछले जन्म का कोई अपराध आपके धर्म में कमी नही होने देगा। ' - कहते हुए मैंने अपनी छोटी सी मुठ्ठी माँ की हथेली पर खोल दी । माँ की हथेली पर नमक बिखरा हुया था ।

'पिछला जनम में जरुर बहुते पुण्य कैले रहल होयब जे ई जनम तोरा अईसन बेटा मिला।' पिछले जन्म में जरूर बहुत पुण्य किए होंगे जो इस जन्म में तुम्हारे जैसा बेटा मिला। कहते हुए माँ ने मुझे अपने सीने से भींच लिया । उनकी आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। मुझे तो लग रहा था कि जैसे मुझे कई जन्मों के पुण्य का फल मिल गया।



प्रभात कुमार झा
उप स्टेशन प्रबंधक
कटनी स्टेशन, जबलपुर मंडल

अखियों के नूर : घर से दूर



रेलवे में वाणिज्य निरीक्षक का कार्य विविधता पूर्ण होता है, साथ ही शासकीय कार्यों से विभिन्न ट्रेनों में जाना पड़ता है, इन यात्राओं के दौरान विविध प्रकार के यात्रियों से बातचीत करने, उनको देखने समझने का मौका मिलता है, पहले जहाँ सिर्फ व्यावसायिक कार्यों या घुमने फिरने के लिए लोग ज्यादातर यात्रा करते थे वहीं आज कल स्कूली शिक्षा, कोचिंग, परीक्षाओं की तैयारी, उच्च शिक्षा, नयी-नयी नौकरी के लिए कम उम्र के व नव युवा लड़के-लड़कियों की संख्या बढ़ती जा रही है, पहले की तुलना में आज के बच्चे ज्यादा पैम्पर्ड व उनके माता पिता की एक या दो संतानों में एक होने के चलते ज्यादा ही लाड़ले होते हैं।

जब इस तरह के बच्चों को उनके माता-पिता स्कूली शिक्षा, कोचिंग, परीक्षाओं की तैयारी, उच्च शिक्षा, नयी-नयी नौकरी के लिए ट्रेन में छोड़ने आते हैं तो विभिन्न तरह की सलाह लगातार देते रहते हैं वहीं मन ही मन सशंकित रहते हैं उनके प्रति कि कैसे अंजान माहौल में खुद को रमा सकेंगे, नए लोगों से कैसे तारतम्य बैठाएंगे, बिटिया अनजान शहर में कैसे रहेगी, अपनी छोटी-छोटी जरूरतों के लिए माँ पर आश्रित बेटा अपना ख्याल ठीक से रख पायेगा या नहीं, यदि कोई समस्या आती है तो उसको ढ़ाढ़स कौन बंधायेगा, उसके कदम लक्ष्य से भटक तो नहीं जायेंगे, अचानक मिली स्वतंत्रता उसे बिगाड़ तो नहीं देगी और ऐसे ही कई विचार उनको परेशान करते रहते हैं।

उनके मन के सवाल न सिर्फ उचित हैं बल्कि उनके संतान के प्रति प्रेम को भी दर्शाते हैं किंतु इनके कारण उनके भविष्य से खिलवाड़ तो नहीं किया जा सकता और अब तो तकनीकी क्रांति के युग में करीबियों के संपर्क में रहना बहुत आसान है। हॉस्टल का अनुभव बच्चों के व्यक्तिव निखार में अहम् भूमिका निभा सकता है बशर्ते अभिभावक उन्हें उनकी जिम्मेदारियां और सही गलत का भेद उचित तरीके से समझा पायें । ऐसी परिस्थितियों में निम्न बातों पर यदि ध्यान दिया जाये तो माता पिता ज्यादा संतोष से अपने बच्चों को उनके करियर के लिए दूर भेज पाएंगे।

1. सबसे पहले तो उनको विनम्रता से बात करना सिखाएं, यह ऐसी चीज है जो उनके दैनिक कार्यों से लेकर विषम परिस्थितियों में काम आएगी।
2. उनके मन में बाहर जाकर पढाई करने का सपना जगाएं तो उन्हें यह बताएं की हम तुम्हें इसलिए भेज रहे हैं कि तुम अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बिना किसी अवरोध के बढ़ सको।
3. अन्य योग्य साथियों के साथ रहने से तुम्हारी योग्यता और प्रतिभा में और निखार आएगा, यह समझाएं।
4. यह भी बताएं कि वहां से तुम्हें उचित मार्गदर्शन मिल सकेगा।
5. यदि बच्चा घर के कामों से दूर रहा है तो उसे अपने काम स्वयं करने हेतु प्रेरित करें, स्वावलंबी होना गौरव की बात है ये उनको महसूस कराएँ ।
6. हॉस्टल या बाहर कहीं और अकेले ग्रुप में रहने के लिए जाने से पहले कपड़े धोना, आयरन करना, चाय और कुछ नाश्ता बनाना, साफ-सफाई जैसी जरुरी चीजों को सीखने के लिए प्रेरित करें, उन्हें बताएं कि ये सब उनका जीवन आसान करेंगे और उनको कोई असुविधा नहीं होगी।
7. नयी उम्र में बच्चों का एक-दूसरे पर प्रभाव और नयी चीजें जादू सा असर करती हैं। उनमे बड़े शहर की भागती दौड़ती जिंदगी, फास्ट फूड से पेट भरने की आदतें, गैजेट्स से लगाव पैदा हो सकता है। एक सीमा के पश्चात् ये चीजें उनको भ्रमित कर सकती हैं इसलिए विभिन्न उदाहरण देकर उनको सही गलत का भान कराते रहें।
8. उनको ज्यादा और अच्छे मित्रों के होने के फायदे बताएं और नए मित्र बनाने के लिए प्रेरित करें।
9. सबसे महत्वपूर्ण बात उनको ये अहसास कराएँ की वो अपनी हर बात माता-पिता से नि:संकोच शेयर कर सकते हैं।



नरोत्तम नामदेव
मुख्य वाणिज्य निरीक्षक, मुख्यालय
जबलपुर मो. 9893817593

मेरी ट्रेन यात्रा। (यात्रा संस्मरण)

बात ज़रा सी लेकिन....



बात 2010 की होनी चाहिए। मेरा पुत्र राघवेन्द्र जो कि जर्मनी में रहता था, वह आया तो पहले दो दिन अपनी बहन किरण के यहां जबलपुर रहकर सतना आना था हमारे पास। तब हम सतना ही रहते थे। मैं उसे लेने जबलपुर आ गया था। तीसरे दिन राघवेंद्र ने अपना व मेरा आरक्षण ए सी 2 में पहले ही करवा रखा था।

जबलपुर से ट्रेन चली तो इतना धीमे से कि क्या कहना। फिर तो सिहोरा रोड ट्रेन पहुंची तो इतना सुंदर ढंग से खड़ी हुई व रवाना हुई कि पता ही न चले। मेरे मुख से स्वत: निकल जाए, वाह! फिर तो लोको पायलट के ट्रेन खड़ी करने व चलने पर व सेक्शन में चलने पर ही मेरा ध्यान अटक गया और बार-बार मेरे मुख से स्वत: निकलने लगा। मैंने बेटे से कहा कि भाई यह लोको पायलट इतने अच्छे ढंग से ट्रेन चला रहा है कि सतना पहुंचने पर उसे बधाई देने का जी हो रहा है।

कभी स्वत: मेरे मुँह से निकलता एक ही शब्द – वन्डरफुल!!

पता ही न चलता ट्रेन के रवाना होने का और रुकने का और रनिंग टाइम न केवल मेनटेन कर रहा था बल्कि हर सेक्शन में 20 से 40 सेकंड गेन ही कर रहा था। ट्रेन सतना रुकी तो बहुत भीड़ थी। मेरा कोच बहुत पीछे था, अत: मैंने चालक को बधाई देने का विचार छोड़ दिया। तभी बेटे ने कहा कि आप चालक को बधाई देने जाने वाले थे। मैंने कहा कि भीड़ बहुत है। इसलिए यहीं से उसके लिए प्रार्थना व शुभकामनाएं कर ली। बेटे ने कहा कि आप जाइये, बधाई दे आईये, मैं यहीं रुका रहूँगा। फिर तो मैं तेजी से गया। चालक यहां से जाने वाले चालक को चार्ज दे चुका था और नीचे उतर के जाने को ही था कि मैंने उनको बहुत उम्दा ड्राइविंग के लिए बहुत-बहुत बधाइयां देते हुए बताया कि मैं सेवानिवृत लोको फोरमैन हूँ। उसकी तो आंखों में आंसू डबडबा आये। उसने कहा, 'सर मुझे एक दो पुरस्कार जरूर मिले है पर इतना बड़ा पुरस्कार तो कभी न मिला था कि एक सेवा निवृत्त लोको फोरमैन अपने घर जाने के बजाय मुझे बधाई देने आए। कहते-कहते उसकी आंखें डबडबा आईं। मैंने उसे गले लगा लिया और फिर दुहराया कि सचमुच तुम्हारी ड्राइविंग से इतना ज्यादा खुश हुआ कि आना ही पड़ा। चलता हूँ, मेरा बेटा जर्मनी से आ रहा है। पीछे खड़ा प्रतीक्षा कर रहा है। उसने कहा यह पुरस्कार जीवन पर्यंत न भूलेगा और मैं बेटे को लेने चला गया। आज अफसोस यह है कि लोको पायलट का नाम क्यों याद न रखा। वास्तव में ऐसा सोचा न था कि कभी उसका लिखकर जिक्र करूँगा।''

भारतीय रेल : अमरीकी यात्री

मैं तब सतना रहता था। उपचार आदि के लिए कभी कभी जबलपुर आना ही पड़ता था। एक बार (सन सम्वत याद नहीं) जब मुझे जबलपुर आना था तो कंडक्टर ने एसी 2 में जो सीट बताया, उसमें भारतीय मूल के तीन अमरीकी भी थे। वे पति-पत्नी व 12-13 साल का पुत्र था। वे अपने मे मगन थे, मैं एक पुस्तक पढ़ने में। जब ट्रेन मैहर से छूटी तो पिता ने बेटे से कहा – वह देखो मैहर देवी का मंदिर और तीनों बड़े उत्साह व कौतुहल से मंदिर देखते रहे व हाथ जोड़कर प्रणाम करते रहे। मेरे मन में उनकी एक सामान्य दर्जे के अन्धविश्वासी की छवि बनी।

कटनी से प्रस्थान करने के कुछ देर बाद पिता ने बेटे से कहा कि वे साल में एक बार भारत आते हैं और हर बार इसी ट्रेन (महाकौशल एक्सप्रेस) से जबलपुर आते है और यह ट्रेन हमेशा 'लेट' ही रहती है। मैं चुपचाप सुनता रहा। (क्योंकि ट्रेन एक दम सही समय से चल रही थी)

जब हम जबलपुर पहुंच रहे थे व ट्रेन कुछ मिनट समय से पहले पहुंच रही थी तो मैंने उनसे कहा- 'क्षमा करिएगा, जरा सी बात करना चाहता हूँ।''उन्होंने बड़े उत्साह से कहा, 'कहिए।'

मैंने उनसे कहा कि अब कभी न कहिएगा कि महाकौशल एक्सप्रेस हमेशा विलम्ब से चलती है क्योंकि आज यह ट्रेन समय से कुछ मिनट पहले प्लेटफॉर्म पर खड़ी होने जा रही है।''वे थोड़ा झिझके। फिर मैंने कहा, 'और जिस अमरीका की पंक्चुअलिटी की आप तारीफ कर रहे थे वहां के लिए मैं ट्रांस वर्ल्ड एयरलाइन्स (जो कि अमरीकी एयर लाइन्स है) से मुम्बई से 29 जून 1985 को प्रात: 6:15 पर रवाना हुआ। रास्ते में जहां जहाज का जाने का शिड्यूल न था, वहां आइबेरिया जाना पड़ा क्योंकि फ्यूल पर्याप्त न था। और इस कारण न्यूयॉर्क इतने विलम्ब से पहुँचे कि मेरी सेंट लुइस व पोर्टलैंड की लोकल फ्लाइटस मिस हो गयीं और अगले दिन 15:55 बजे के पूर्व वहां के लिए दूसरी कोई फ्लाइट न थी। ''तब तक हम जबलपुर प्लेटफॉर्म पर तीन मिनट पहले खड़े हो चुके थे। और उन्होंने हंसते हुए क्षमा मांगी यह कहने के लिए कि''ट्रेन हमेशा लेट रहती है।''

✍ शिव कुमार वर्मा,
सेवानिवृत्त
लोको फोरमेन, पमरे



कविता

'हिंदी प्यारी'



अपनी भाषा हिंदी प्यारी
हुई पराई देश में,

छद्म दिखावा झूठ फैलता
पावन निर्मल वेश में,

आंक रहे अपने को कम
पढ़ गीता के संदेश में,

भाषा करती एक नेक सब
हम जीवित जिस परिवेश में

आज ढूंढती घर द्वारे सब
हिंदी पहचान स्वयं के देश में,

हमने स्वयं जहर है घोला
अमृत के परिवेश में,

सबसे सरल सहज भाषा जो
गुम होती उन्नति के निवेश में,

जीवन अपना किया पराया
सबने अपने देश में,

भाव भक्ति हिंदी भाषा की
सब एक बनें परिवेश में

ज्ञान बढ़ाकर सब भाषा का
पहचान बने हिंदी के भेष में

खुशियाँ की गागर छलकेगी
अपनाएँ भाषा, हिंदी के देश में।



अखिलेश ब्यौहार 'शिक्षक'
रेलवे हाई स्कूल, जबलपुर
मो. : 7692068918



कविता

हमारी हिंदी

आन है हिंदी, बान है हिंदी,
घर-घर गूँजी हिन्दुस्तान है, हिंदी।

संस्कृत भाषा के मूल में बसती,
देवनागरी लिपि को प्रतीक समझती,
धार्मिक ग्रंथों में कल-कल बहती,
अंचल राज्यों के चिर उर को चीरकर,
और फिर वारिध पार निकलती।

माँ सरस्वती के कंठ बिराजै,
वीणा का वरदान है हिंदी,

आन है हिंदी, बान है हिंदी,
घर-घर गूँजी हिन्दुस्तान है, हिंदी।

सदियों से संस्कृति में सजती,
हमारे हर संस्कार में पलती,
दिल से दिल को खूब समझती,
मन के आंसू हरहाल निगलती,

जीने की आशा की धड़कन,
मानवता की पहिचान है हिंदी।

आन है हिंदी, बान है हिंदी,
घर-घर गूँजी हिन्दुस्तान है, हिंदी।

धर्म-निरपेक्षता का किरदार निभाती,
भारतीय रेल के परिवहन सफर में,
हरधर्मों में सामजंस्य बिठाती,
इंसां को मानवता के रंग में रंगकर,
घुल-मिलकर त्योहार मनाती।

जनमानस की आस्था, अनुभूति,
धड़कन और अरमान है हिंदी।

आन है हिंदी, बान है हिंदी,
घर-घर गूँजी हिन्दुस्तान है, हिंदी।

स्वाधीनता का सूरज जब आया,
अंग्रेजी की काली छाया को,
तब हिंदी ने दूर भगाया।



संविधान निर्माताओं ने हिंदी को परखा,
संविधान अनुच्छेद में हो गई बरखा।
राजनीतिक माहौल से धुंधली,
और हो गई गुमनाम सी हिंदी।

आन है हिंदी, बान है हिंदी,
घर-घर गूँजी हिन्दुस्तान है, हिंदी।

वैश्विक समाज व्यवसायिक स्तर पर निहारें,
यूरोप, एशिया और घटक विश्व के,
अब हिंदी, हिंदी ही पुकारे।

मानवता के हर प्रतीक का,
करती है गुणगान है हिंदी,

आन है हिंदी, बान है हिंदी,
घर-घर गूँजी हिन्दुस्तान है, हिंदी।

देश के महानुभाव और श्रीमान,
संविधान में कर डालो संशोधन,
कार्यालय एवं अन्य कामकाज में,
हो हिंदी का अधिकतम आवंटन।

दूसरे नंबर की विश्व की भाषा,
सारे जगत की शान है हिंदी।

आन है हिंदी, बान है हिंदी,
घर-घर गूँजी हिन्दुस्तान है, हिंदी।

हर कर्मचारी अब शपथ ये खायें,
अब हिंदी फाइलों में रम जाये,
पठन-पाठन के हर विषयों में,
अब हिंदी की वर्षा हो जाये।

देश के खातिर सीमा पर लड़ती,
देश के भीतर कुरबान है हिंदी।

आन है हिंदी, बान है हिंदी,
घर-घर गूँजी हिन्दुस्तान है, हिंदी।



राजेश कुमार लखेरा
सीनियर सेक्शन इंजी. (टेली), कटनी
जबलपुर मंडल, पमरे, मो. : 9752418829

कविता



शिक्षा उम्र की मोहताज नहीं होती

मानव जीवन की पहली शिक्षक, पिता से पहले होती माँ,
संतानों को शिक्षित करने का, हर पल स्वप्न संजोती माँ।
बिन शिक्षा के तो मानव की ऊँची परवाज़ नहीं होती,
ऐसा मेरा अपना मत है कि शिक्षा उम्र की मोहताज नहीं होती।।

शिक्षा है समाज की आत्मा, जो चलती पीढ़ी दर पीढ़ी,
ज्ञान वो कुशल मार्गदर्शक है, जो चढ़ाये सफलता की सीढ़ी।
निरक्षरों का होता सदैव शोषण, बुलंद उनकी आवाज नहीं होती,
ध्यान रखिये इस बात को शिक्षा उम्र की मोहताज नहीं होती।।

आत्म विश्वास खोये बिना धैर्य और सब्र भी सिखाये शिक्षा,
जिससे जीवन के हर मोड़ पर साबित हो मनुष्य की दीक्षा।
बिन शिक्षा कुरीतियों से लड़ने की मुखरित आवाज़ नहीं होती,
आयु कभी कब होती बाधक, शिक्षा उम्र की मोहताज नहीं होती।।

जिसने लिखना पढ़ना छोड़ा, हुआ विचारों से वह बूढ़ा,
ज्ञान प्राप्ति जारी जो रखता, कहलाता है वही युवा।
ठोस इरादे अगर न होते, तो मैं यहां आज नहीं होती,
गांठ बांध ले सरल बात यह, शिक्षा उम्र की मोहताज नहीं होती।।

✍ **कौशिक सेनगुप्ता**
कार्यालय अधीक्षक, सतर्कता शाखा
महाप्रबंधक कार्यालय, पमरे, जबलपुर



पानी

मुँह धोऊँगा पानी से,
मुन्ना बोला नानी से,

प्यासे पानी पीते हैं,
पानी से हम जीते हैं,

जाने कब से पानी है,
कितनी बड़ी कहानी है,

कहीं ओस है, बर्फ कहीं
पानी ही क्या भाप नहीं,

सब रूपों में पानी हैं
कहती ऐसा नानी हैं,

नदियाँ बहती कल-कल-कल
झरने गाते छल-छल-छल,

तालों में लहराता जल,
कुँओं में आता निर्मल जल

धरती पर पानी आया
खेंत सींचकर लहराया,

आता हैं यह कितने काम,
कभी नहीं करता आराम,

पर जब बाढें लाता हैं,
भारी आफ़त ढ़ाता है,

हरा-भरा रखो इस जग को,
वृक्ष तुम खूब लगाओ

पानी है अनमोल रत्न,
तुम एक-एक बूंद बचाओ।



श्रीमती वर्षा मालवीय
पत्नी राकेश कुमार मालवीय,
वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय, जबलपुर

राजभाषा के क्षेत्र में पश्चिम मध्य रेलवे की उपलब्धियां

पुरस्कार योजना का नाम	पुरस्कार वर्ष
कमलापति त्रिपाठी स्वर्ण पदक :-	2019
रेल मंत्री राजभाषा पदक वर्ष :-	2007 से लगातार(कुल 15), वर्ष 2021 में अपर महाप्रबंधक श्री रवि शंकर सक्सेना सम्मानित
रेलवे बोर्ड की राजभाषा व्यक्तिगत नगद पुरस्कार योजना :-	वर्ष 2003 से लगातार (प्रतिवर्ष 04 अधिकारी/कर्मचारी)
रेल मंत्री राजभाषा शील्ड :-	2014 – इटारसी, डीजल शेड, 2015 – तुगलकाबाद, विद्युत शेड, 2016 – नई कटनी जंक्शन, डीजल शेड, 2017 – इटारसी, विद्युत शेड, 2018 – नई कटनी जंक्शन, विद्युत शेड
आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी चल वैजयंती :-	2010 – कोटा मंडल, 2018 – भोपाल मंडल, 2020 – जबलपुर मंडल
रेल मंत्री राजभाषा ट्रॉफी :-	महाप्रबंधक कार्यालय – 2011 एवं 2017
मुंशी प्रेमचंद मौलिक लेखन पुरस्कार योजना :-	2010 – द्वितीय, 2011 – तृतीय, 2012 – प्रथम, 2013 – तृतीय, 2014 – प्रथम, 2015 – द्वितीय, 2019 – प्रथम, 2020 – द्वितीय
मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार योजना :-	2013 – प्रथम, 2014 – तृतीय, 2015 – प्रथम, 2016 – द्वितीय, 2019 – द्वितीय, 2020 – द्वितीय
लाल बहादुर शास्त्री तकनीकी मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार योजना :-	2014 – तृतीय, 2017 – तृतीय, 2019 – प्रथम, 2022 – प्रथम
रेल यात्रा वृतांत पुरस्कार योजना :-	2013 – तृतीय, 2014 – प्रथम, 2016 – तृतीय, 2017 – द्वितीय, तृतीय एवं प्रेरणा, 2019 – (2 प्रेरणा), 2020 – तृतीय एवं प्रेरणा, 2022 – (2 प्रेरणा)
रेल मंत्री हिंदी निबंध प्रतियोगिता :-	2014 – प्रथम, 2016 – अधिकारी प्रथम, कर्मचारी प्रथम, 2019 – द्वितीय
अखिल रेल हिंदी निबंध, वाक् तथा टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता :-	2005 – टिप्पण एवं वाक् : प्रथम, निबंध : द्वितीय, 2007 – टिप्पण प्रेरणा, 2013 – वाक् : प्रथम, प्रेरणा, 2014 – टिप्पण : तृतीय, वाक् : 2 प्रेरणा, 2015 – टिप्पण : प्रेरणा, 2016 – निबंध : प्रथम, प्रेरणा, टिप्पण : द्वितीय, वाक् : द्वितीय, 2017 – टिप्पण : तृतीय, प्रेरणा, 2018 – टिप्पण : तृतीय
अखिल रेल नाट्योत्सव प्रतियोगिता :-	2005 – तृतीय : सह कलाकार, 2006 – द्वितीय : संगीत, 2013 – प्रथम : निर्देशक, अभिनेता, ध्वनि, प्रकाश, बोर्ड में मंचन हेतु 50000 रूपये का नगद पुरस्कार, 2014 – प्रथम : निदेशक, 2020 – तृतीय, 2022 – प्रेरणा : सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री
संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति के साथ निरीक्षण बैठक :-	जून – 2005, सितम्बर – 2006, सितम्बर – 2012, फरवरी – 2013 तथा अप्रैल व अक्टूबर – 2022 में सफल बैठक का आयोजन

छायाचित्र - वीथिका

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 61वीं बैठक का आयोजन



क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 61वीं बैठक के अवसर पर राजभाषा विभाग की गृह पत्रिका 'राजभाषा सरिता' का विमोचन करते हुए महाप्रबंधक श्री सुधीर कुमार गुप्ता, उपस्थित अपर महाप्रबंधक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री रवि शंकर सक्सेना, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक श्री पंकज शर्मा एवं अन्य अधिकारीगण





क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 61वीं बैठक के अवसर पर उपस्थित सदस्य अधिकारीगण



क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 61वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री सुधीर कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक, पमरे एवं उपस्थित श्री रवि शंकर सक्सेना, अपर महाप्रबंधक व मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अन्य अधिकारीगण



महाप्रबंधक, श्री सुधीर कुमार गुप्ता, को स्केच पेंटिंग भेंट करते हुए रेल परिवार की स्कूली छात्रा कु. जुही यादव, उपस्थित अपर महाप्रबंधक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी श्री रवि शंकर सक्सेना एवं अन्य अधिकारीगण

छायाचित्र - वीथिका

मुख्यालय की राजभाषा गतिविधियां



हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर आयोजित अधिकारी प्रश्नमंच की अध्यक्षता करते हुए श्री रवि शंकर सक्सेना अपर महाप्रबंधक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी



हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर आयोजित कर्मकारी प्रश्नमंच की अध्यक्षता करते हुए श्री महेश कुमार, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी तथा उप वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी(वि/ब)





हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर आयोजित अधिकारी प्रश्नमंच में शामिल अधिकारीगण





हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर आयोजित कर्मचारी प्रश्नमंच में शामिल कर्मचारीगण

छायाचित्र - वीथिका

स्वतंत्रता दिवस समारोह 2023



स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान



स्वतंत्रता दिवस सन्देश का वाचन करते हुए श्री सुधीर कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक महोदय



रेल सुरक्षा बल टुकड़ी का अवलोकन करते हुए महाप्रबंधक महोदय



रेल सुरक्षा बल टुकड़ी से सलामी लेते हुए महाप्रबंधक महोदय



स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर उपस्थित महाप्रबंधक महोदय, अध्यक्ष, पमरे/म.क. संगठन एवं अन्य अधिकारीगण



हर घर तिरंगा अभियान को हरी झंडी दिखाते हुए महाप्रबंधक महोदय

हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर महाप्रबंधक हिंदी दिवस संदेश का वाचन



छायाचित्र - वीथिका

मुख्यालय की राजभाषा गतिविधियां



पुरस्कार प्रदान करते हुए अपर महाप्रबंधक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी, श्री रवि शंकर सक्सेना



हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए श्री रवि शंकर सक्सेना,
अपर महाप्रबंधक एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी



अखिल रेल हिंदी वाक् प्रतियोगिता में उपस्थित निर्णायकगण



हिंदी दिवस–2023 के अवसर पर आयोजित हिंदी टिप्पण एवं आलेखन
प्रतियोगिता में शामिल प्रतिभागीगण



हिंदी दिवस–2023 के अवसर पर आयोजित हिंदी वाक् प्रतियोगिता में
उपस्थित निर्णायकगण





हिंदी दिवस–2023 के अवसर पर आयोजित हिंदी वाक् प्रतियोगिता में शामिल प्रतिभागीगण

हिंदी दिवस 2023 के अवसर पर महाप्रबंधक हिंदी दिवस संदेश का वाचन



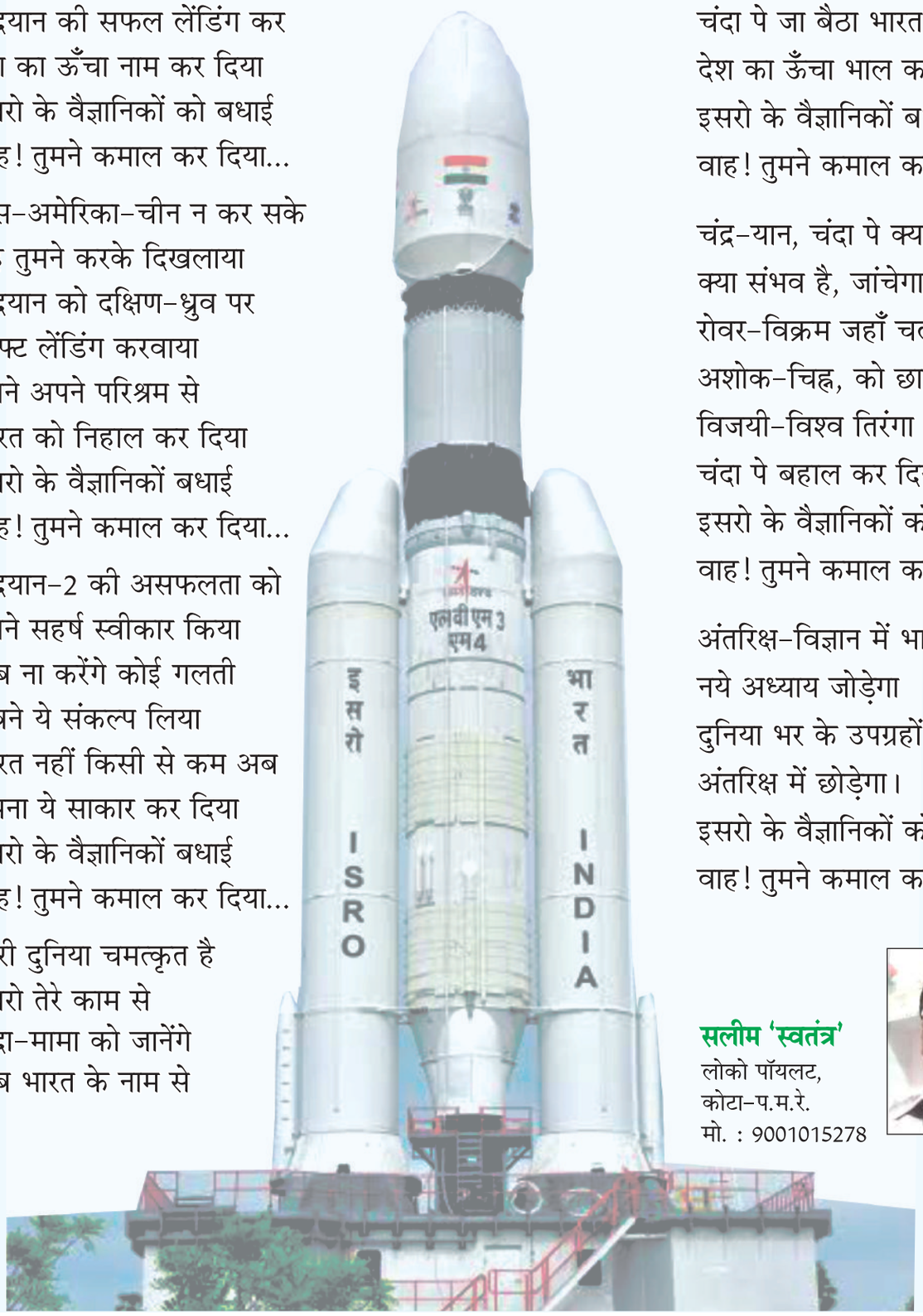
चंद्रयान-3

चंद्रयान की सफल लेंडिंग कर
देश का ऊँचा नाम कर दिया
इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई
वाह! तुमने कमाल कर दिया...

रूस-अमेरिका-चीन न कर सके
वह तुमने करके दिखलाया
चंद्रयान को दक्षिण-ध्रुव पर
सॉफ्ट लेंडिंग करवाया
तुमने अपने परिश्रम से
भारत को निहाल कर दिया
इसरो के वैज्ञानिकों बधाई
वाह! तुमने कमाल कर दिया...

चंद्रयान-2 की असफलता को
तुमने सहर्ष स्वीकार किया
अब ना करेंगे कोई गलती
सबने ये संकल्प लिया
भारत नहीं किसी से कम अब
सपना ये साकार कर दिया
इसरो के वैज्ञानिकों बधाई
वाह! तुमने कमाल कर दिया...

सारी दुनिया चमत्कृत है
इसरो तेरे काम से
चंदा-मामा को जानेंगे
अब भारत के नाम से



चंदा पे जा बैठा भारत
देश का ऊँचा भाल कर दिया
इसरो के वैज्ञानिकों बधाई
वाह! तुमने कमाल कर दिया...

चंद्र-यान, चंदा पे क्या है
क्या संभव है, जांचेगा
रोवर-विक्रम जहाँ चलेगा
अशोक-चिह्न, को छापेगा
विजयी-विश्व तिरंगा अपना
चंदा पे बहाल कर दिया
इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई
वाह! तुमने कमाल कर दिया...

अंतरिक्ष-विज्ञान में भारत
नये अध्याय जोड़ेगा
दुनिया भर के उपग्रहों को
अंतरिक्ष में छोड़ेगा।
इसरो के वैज्ञानिकों को बधाई
वाह! तुमने कमाल कर दिया...

सलीम 'स्वतंत्र'
लोको पॉयलट,
कोटा-प.म.रे.
मो. : 9001015278



हिंदी

आन है हिंदी बान है हिंदी
और हमारी शान है हिंदी,
हिंदी लिखिए हिंदी पढ़िये
हम सबकी पहचान है हिंदी।

उठते और बैठते हिंदी
सोते और जागते हिंदी,
सकल काम हिंदी में करिए
भारत माँ की जान है हिंदी।

इसे बोलना इसे समझना
बहुत सरल संप्रेषण करना,
शब्दकोश भी बहुत बड़ा है
सहज और आसान है हिंदी।

वैज्ञानिक भाषा है हिंदी
हम सबकी आशा है हिंदी,
राष्ट्र एकता निहित है इसमें
हम सबको वरदान है हिंदी।

जन-जन की है भाषा हिंदी
भारत की परिभाषा हिंदी,
इसमें ही है उन्नति अपनी
मान और सम्मान है हिंदी।

उत्तर-दक्षिण व पूरब-पश्चिम
धरती से आकाश तक है हिंदी
गंगा-यमुना-कावेरी में
बहती एक समान है हिंदी।

✍ हरि सहाय पाण्डेय
मुख्य परिवहन निरीक्षक
मुख्यालय, प.म.रेल
मो. : 9752413096

